सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 31, नई दिल्ली । शुक्रवार, 11 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सत्य बोलकर मित्र बनाना अच्छा है, परन्तु झूठ बेलकर मित्र बनाने से सत्य बोलकर शत्रु बनाना अधिक अच्छा है, क्योंकि आप संसार में सबको एक साथ प्रसन्न नहीं कर सकते।

03 पर्यावरण पाठशाला: तुम्हारे पास आज शक्ति हो सकती है, लेकिन समय...
06 जैव विविधता बचाने को हो वन्य जीवों का संरक्षण
08 महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती: समानता और शिक्षा का संकल्प दिवस

डिजिटल युग में गोपनीय डाटा सुरक्षित रखने वाला विभाग ही जनता का अति गोपनीय डाटा उपलब्ध करवाने लगे तो कैसे रुक सकता हैं साईबर क्राइम

भारत देश की जनता का परिवहन विभाग में उपलब्ध गोपनीय डाटा आसानी से खुले आम 25 रुपए से 800 रुपए में ऐप पर उपलब्ध

संजय बाटला

अत्यावश्यक: गंभीर डेटा सुरक्षा उल्लंघन और व्यक्तिगत जानकारी से समझौता। मैं आपको एक बहुत ही गंभीर मुद्दे के बारे में सूचित करने के लिए यह लिख रहा हूँ, जो बार बार मेरे सामने आ रहा है। ऐसा लगता है कि राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एन.आई.सी) में एक बड़ी सुरक्षा समस्या है, जहाँ से लगातार वाहनों और वाहन मालिकों के मोबाइल नंबरों से संबंधित व्यक्तिगत डेटा लीक हो रहा है।

मैंने पाया कि यह डेटा, जैसे वाहन विवरण और चालान रिकॉर्ड, टेलीग्राम पर सिर्फ 20 डॉलर में शेयर किया जा रहा है। मैंने यह भी पाया कि भारत के प्रधानमंत्री के लिए पंजीकृत वाहन से जुड़ा मोबाइल नंबर तक भी इस ऐप पर उपलब्ध कराया जा रहा है!

इससे भी ज़्यादा चिंताजनक बात यह है कि टेलीग्राम पर ऐसे बॉट हैं जो सिर्फ़ 150 रुपये में परीक्षा पास करके आपको लर्नर लाइसेंस दिलाने का दावा कर रहे हैं। इसका मतलब है कि पूरे सिस्टम का दुरुपयोग किया जा रहा है और लोग इस अवैध नेटवर्क के ज़रिए आसानी से महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों तक पहुँच बना सकते हैं।

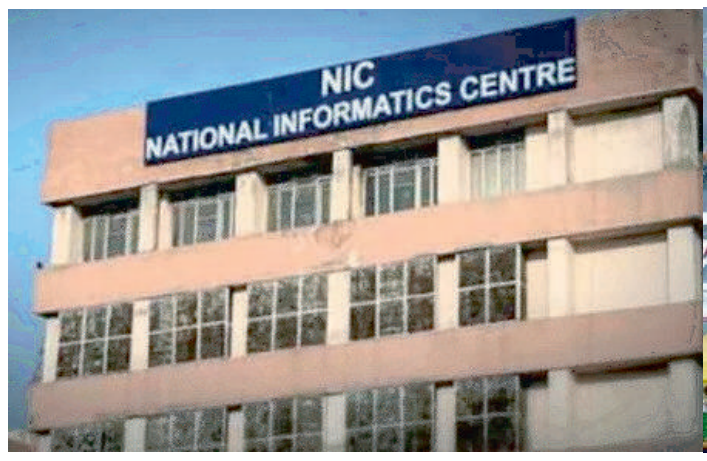

यह बिलकुल स्पष्ट है कि यह मुद्दा बहुत गंभीर है, और ऐसा लगता है कि सिस्टम के अंदर ऐसे लोग हैं जो इन अपराधियों की मदद कर रहे हैं। जिस तरह से चीजें चल रही हैं, ऐसा लगता है कि सरकार में कोई भी इस बारे में कुछ नहीं कर रहा है, भले ही वे समस्या से अवगत हों। ऐसा लगता है कि अपराधियों और अधिकारियों के बीच कोई संबंध है। इस मुद्दे को आपके ध्यान में लाना चाहता था क्योंकि आप भी किसी वाहन के मालिक, ड्राइविंग लाइसेंस वाले जरूर होंगे और यह एक बहुत बड़ी समस्या है जो सभी नागरिकों की सुरक्षा और गोपनीयता को प्रभावित कर रही है, ऐसा लगता है कि इस समय जनता की सुरक्षा के प्रति कोई भी उत्तरदायित्व लेने को तैयार नहीं है। **अब सवाल यह उठता है की** क्या एन. आई. सी. इसीलिए जनता के अति महत्वपूर्ण सुरक्षित डाटा को बेखौफ उपलब्ध करवाने से नहीं घबरा रहा क्योंकि केन्द्रीय सूचना प्रौद्योगिकी एवम्-दूरसंचार मंत्री द्वारा डिजिटल पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल में संशोधन करवाया जा रहा हैं जिसके बाद भ्रष्टाचार से संबंधित जानकारी हासिल करने पर ही रोक लग जाएगी और भ्रष्टाचार को जनता के समक्ष लाने वालो पर लग सकेगा भारी भरकम जुर्माना और जेल।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

महिलाओं के लिए बस में मुफ्त यात्रा रहेगी जारी पर किन महिलाओं को नहीं मिलेगा मुफ्त सफ़र , जाने

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद कई तरह के बदलाव शुरू हो गए हैं। इनमें से एक है दिल्ली में फ्री बस सफर के लिए अब नहीं लेना पड़ेगा पिंक पास वजह यह है की रेखा गुप्ता सरकार 'पिंक टिकट' सिस्टम को खत्म करने जा रही है। दिल्ली की बसों में मुक्त सफर के लिए महिलाओं को अब प्राप्त करना होगा स्मार्ट कार्ड।

दिल्ली के परिवहन अधिकारियों का कहना है कि मुफ्त बस सफर के लिए जल्द ही स्मार्ट कार्ड की शुरुआत होने वाली है और इसके लिए रजिस्ट्रेशन भी जल्द ही शुरू किया जा रहा हैं। रजिस्ट्रेशन करवाने वाली महिलाओं को जारी किया जाएगा स्मार्ट कार्ड जो इसकी पात्र है। फिलहाल जब तक स्मार्ट कार्ड की शुरुआत नहीं हो पा रही है तब तक पिंक टिकट के जरिए सफर की सुविधा जारी रहेगी। मुफ्त बस सफर योजना का लाभ अब सिर्फ दिल्ली की महिलाओं को ही मिलेगा। इस सुविधा का लाभ तभी लिया जा सकता है जब आपके पास स्मार्ट कार्ड होगा। स्मार्ट कार्ड प्राप्त करने के लिए दो नियम बनाए गए हैं

1. पंजीकरण करवाना और स्मार्ट कार्ड लेना अनिवार्य होगा जो महिलाएं पंजीकरण नहीं करवाएगी उन्हें स्मार्ट कार्ड नहीं जारी किया जाएगा और उन्हें बस सफर के लिए टिकट लेना अनिवार्य होगा,
2. स्मार्ट कार्ड अप्लाई करने के लिए महिलाओं के आधार या वोटर कार्ड में दिल्ली का पता होना अनिवार्य है। उन महिलाओं को अब फ्री सफर उपलब्ध नहीं होगा

जिनके पास दिल्ली के पते का आधार या वोटर कार्ड नहीं होगा। भाजपा सरकार का आरोप है कि आम आदमी पार्टी की सरकार के द्वारा मुफ्त सफर के नाम पर बड़े पैमाने पर घोटाला हुआ है। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि जितनी महिलाएं सफर कर रही थी उनसे कहीं अधिक टिकट जारी करके सरकार से भुगतान प्राप्त किया जा रहा था। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बजट सत्र के दौरान विधानसभा में कहा था, 'हम महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा की सुविधा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं पर इसके नाम पर भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने साथ ही कहा महिलाओं के लिए डिजिटल यात्रा कार्ड शुरू करेंगे, जो उन्हें सरकारी बसों में कभी भी स्वतंत्र रूप से मुफ्त यात्रा करने की सुविधा देगा, जिससे टिकट से जुड़ा 'गुलाबी भ्रष्टाचार' खत्म हो जाएगा।'

"कुल मिलाकर इसका अर्थ साफ है की दिल्ली में स्थायी रहने वाली और पंजीकरण करवाने वाली महिलाओं को फ्री सफर उपलब्ध रहेगा और सरकारी कोष से भ्रष्टाचार भी होगा दूर"

आखिर क्यू और किन कारणों के चलते जनता के रखवाले खाकी वर्दी वाले अपनी जिदगी से मुंह मोड़ रहे हैं ?

संजय बाटला

जनता की रखवाली करने वाली पुलिस भी किसी3 दर्द से गुज़रती हैं शायद हम में से यह किसी को नजर नही आता या यह भी बोल सकते हैं की हम देखना ही नही चाहते। अपनों को रोता छोड़ जनता की सुरक्षा में नजर आती यह ख़ाकी, दिन हो या रात, धूप हो या बरसात, सेवा में खड़ी नज़र आती यह ख़ाकी, सब के दुख दर्द में खड़ी नजर आती यह ख़ाकी।

जनता जनार्दन की सुरक्षा के लिए अपनों के हर वादे तोड़ के आती हैं यह खाकी, आपके लिए अपनों को रोता छोड़ कर आती हैं यह ख़ाकी, दिन हो या रात, धूप हो या बरसात आपकी सेवा के लिए यही खड़ी नज़र आती यह ख़ाकी, सब के दुख दर्द में खड़ी नजर आती यह ख़ाकी। हमारे देश की सुरक्षा में जितनी भूमिका भारतीय सेना की है, उतनी ही पुलिस की भी है! पुलिस वाले हमारे लिए रात भर चैन से सोने के लिए अपनी नींद की कुर्बानी देते हैं इनकी जितनी तारीफ करें उतनी कम है लेकिन यही पुलिस किस दर्द से गुज़रती हैं यह किसी को नजर नही आता हैं बल्कि सच तो यह हैं कि हम देखना ही नही चाहते! **कुछ वर्षों से पुलिसकर्मियों द्वारा आत्महत्या के अनेक मामले सुनने में आ रहें हैं आखिर क्यों और क्या है इसका कारण ?**

*. क्या इन पर काम का दबाव अधिक डाला जा रहा है?

*. क्या इन पर पारिवारिक तनाव बढ़ रहा हैं?

अनुशासित पुलिस बल में आत्महत्या के मामले क्या सिर्फ काम के बोझ की वजह से हो रहे हैं? बिगड़ा खानपान, अनियमित दिनचर्या से ज्यादातर पुलिस कर्मचारियों को नींद न आने की बीमारी हो रही है या परिवार की टेंशन इसका सीधा असर पुलिस कर्मचारियों के स्वास्थ्य और कामकाज पर पड़ रहा है! पुलिस कर्मचारी चिड़चिड़े तो हो ही रहे हैं साथ ही उनमें डिप्रेशन भी बढ़ रहा है! मनोचिकित्सकों के पास इस तरह के कई मामले सामने आ रहे हैं! कई पुलिसकर्मियों को तो यह पता ही नहीं है कि व डिप्रेशन का शिकार हैं! डॉक्टरों के अनुसार दस में से छह पुलिसवालों में इस तरह की समस्या है !तनाव मन से संबंधी रोग है जो मन की स्थिति और बाहरी परिस्थिति के बीच असंतुलन के कारण तनाव होता है! तनाव से व्यक्ति में कई मनोविकार पैदा होते हैं! इससे व्यक्ति हमेशा अशांत, अस्थिर रहता है, तनाव एक द्वंद की तरह है जो व्यक्ति के मन एवं भावनाओं में अस्थिरता पैदा करता है इससे कार्यक्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है काम के दबाव के कारण व परिवार की परेशानियों से लगभग हर पुलिस कर्मचारी तनाव में रहता है! दिन-रात ड्यूटी के कारण पुलिस कर्मचारी चिड़चिड़े हो रहे हैं!

पुलिस कर्मचारियों को बात-बात पर गुस्सा आता है काम के बोझ के कारण ही उनके शरीर में मेलाटोनिन हार्मोंस असंतुलित हो रहा है। शरीर के बायोलॉजिकल क्लॉक गड़बड़ा रहे है जब नींद नहीं आती है तो कई पुलिस कर्मचारी नींद की गोलियां तक खाते हैं! लंबे समय तक तनाव में रहने के कारण फिर वह डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं! **डॉक्टरों का कहना है कि ड्यूटी का समय ज्यादा होने, काम का दबाव, तनाव, नींद न आना, परिवार से दूरी की वजह से अवसाद का शिकार होने के मामले पुलिस कर्मचारियों में देखे जा रहे हैं!** हाल में कई आत्महत्या जैसे लखनऊ पुलिस लाइन में गोली मारकर आत्महत्या, रामपुर कोतवाली टांडा में तैनात सिपाही ने परिसर में आत्महत्या व गाजियाबाद में सिपाही ने आत्महत्या, मुजफ्फरनगर में पुलिस कांस्टेबल ने की आत्महत्या ऐसे ने जाने और कितने पुलिसकर्मियों ने आत्महत्या की। **अब सोचना जरूरी हो रहा हैं की आखिर क्यों यह जनता के रखवाले ही कुंठा के शिकार हो रहे है ?** अब यह सोचना जरूरी हो गया है की कहीं इसका कारण वर्कलोड, परिवार, हाईप्रेशर या कोई अन्य कारण है! इस मुद्दे पर पुलिस विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों को समूह में मिल कर जांच करनी चाहिए की ऐसा क्यों हो रहा हैं?

पुलिस की नौकरी

क्यों तनाव के माहौल में हो रही है ?

इसमें उसकी लंबी ड्यूटी के तो कारण नहीं हैं ?

ड्यूटी के दौरान माहौल नीरस क्यों रहता है?

किसी एक प्वाइंट पर ड्यूटी लगा दी गई और उसको वहीं रहना है?

रूटीन ड्यूटी के अलावा रोज की एक्स्ट्रा ड्यूटी जिसमें वीआईपी मूवमेंट, कानून व्यवस्था, आपदा, ट्रैफिक जाम शामिल है!

फिर से वही सवाल उठता है कि आखिर किन वजहों के चलते खाकी वर्दी के ये रखवाले जिदगी से मुंह मोड़ रहे हैं! बहरहाल पुलिस कर्मियों द्वारा की जा रही आत्महत्याएं कई मायनों में माथे पर सिलवटें बढ़ाने वाली हैं! यानी चिंता की सबब बनी हुई हैं! इस बाबत माना जा रहा है कि पुलिस वाले लंबी ड्यूटी, तनाव, अधिकारियों का दबाव और कई बार पारिवारिक टेंशन के कारणों के चलते खुद अपने हाथों से मौत को गले लगा रहे हैं! सरकार को इस और ध्यान देना चाहिए और पुलिसकर्मियों में पैदा हो रही इस कुंठित सोच "आत्महत्या" को खत्म करवाने पर कदम उठाने चाहिए जिससे पुलिस कर्मियों की आत्महत्या पर विराम लग सके।

आज के दौर में भगवान महावीर के विचारों की प्रासंगिकता

— एक नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण की पुकार

आज के भौतिकवादी और असहिष्णु समय में भगवान महावीर के विचार पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य जैसे सिद्धांतों के माध्यम से आत्म-शुद्धि और सामाजिक सद्भाव का मार्ग दिखाया। उनके विचार उपभोक्तावाद, हिंसा, पर्यावरण विनाश और नैतिक पतन जैसी समकालीन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। महावीर का दर्शन केवल एक धार्मिक मत नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक जीवनशैली है जो हर मानव को करुणा, संयम और आत्मानुशासन की राह पर चलने को प्रेरित करता है। ऐसे में आज की दुनिया को उनके सिद्धांतों की सख्त ज़रूरत है।

- डॉ सत्यवान सौरभ

आज का युग तकनीकी उन्नति, वैज्ञानिक प्रगति और भौतिक समृद्धि का प्रतीक बन चुका है। लेकिन इस विकास के शोरगुल में कहीं मनुष्य का नैतिक और आत्मिक पक्ष दबता जा रहा है। मनुष्य ने चाँद पर बस्तियाँ बसाने की तैयारी कर ली है, परंतु पृथ्वी पर जीवन की गरिमा और करुणा को बनाए रखना दिन-ब-दिन चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। ऐसे समय में भगवान महावीर के विचार न केवल मार्गदर्शक सिद्धांत हैं, बल्कि एक चेतावनी भी हैं – कि अगर हमने आत्मनियंत्रण, अहिंसा और सहअस्तित्व की राह नहीं अपनाई, तो यह प्रगति भी विनाश का कारण बन सकती है।

महावीर का जीवन: त्याग और तपस्या की मिसाल

भगवान महावीर का जीवन ही उनके सिद्धांतों का जीवंत उदाहरण है। एक राजकुमार होकर भी उन्होंने भौतिक सुखों का त्याग कर सत्य की खोज में तपस्या का मार्ग चुना। उन्होंने आत्मा की शुद्धता, सत्य की अनुभूति और मोक्ष प्राप्ति के लिए कठोर साधना की। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि आत्मिक शांति बाहरी भौतिकताओं में नहीं, बल्कि आत्मानुशासन और करुणा में निहित है।

अहिंसा: आज की सबसे बड़ी ज़रूरत

महावीर स्वामी का सबसे महत्वपूर्ण संदेश था — अहिंसा परमो धर्मः। आज, जब समाज धार्मिक असहिष्णुता, जातीय हिंसा, लैंगिक अपराध, युद्धों और आतंकवाद की चपेट में है, तब यह संदेश एक प्रकाश स्तंभ की भाँति मार्गदर्शन करता है। अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा का विरोध नहीं, बल्कि विचारों, शब्दों और व्यवहार में भी करुणा का समावेश है।

आज सोशल मीडिया के माध्यम से फैलती नफरत, ट्रोलिंग, और वैचारिक कट्टरता के दौर में यदि हम महावीर की अहिंसा को अपनाएं, तो समाज में सहिष्णुता, संवाद और समझदारी को बढ़ावा मिल सकता है।

अपरिग्रह: उपभोक्तावाद के विरुद्ध एक चेतावनी

महावीर ने अपरिग्रह यानी संग्रह की प्रवृत्ति से दूर रहने का उपदेश दिया। आज का उपभोक्तावादी समाज ₹और चाहिए₹ की मानसिकता में जकड़ा है — अधिक धन, अधिक संपत्ति, अधिक उपभोग। लेकिन इसी लालसा ने पर्यावरण को प्रदूषित किया, सामाजिक असमानता बढ़ाई, और मानसिक तनाव को जन्म दिया।

अपरिग्रह का अर्थ है — आवश्यकताओं तक सीमित रहना, अनावश्यक संग्रह से बचना, और जीवन को सरल बनाना। यदि हम इस सिद्धांत को अपनाएं, तो न केवल पर्यावरण की रक्षा संभव है, बल्कि जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार होगा।

सत्य और अस्तेय: नैतिक मूल्यों का क्षरण रोकने का उपाय

आज राजनीति से लेकर कॉर्पोरेट जगत तक, झूठ और छल की नीति एक आम चलन बन गई है। तथाकथित ₹स्मार्टनेस₹ का मतलब अब चालाकी और नैतिकता से समझौता करना हो गया है। लेकिन महावीर का सिद्धांत था — सत्य बोलो और चोरी न करो।

आज जब फेक न्यूज़, धोखाधड़ी, और अनैतिक व्यवहार समाज का हिस्सा बन चुके हैं, तब सत्य और अस्तेय का पालन ही हमें नैतिक रूप से पुनः ऊँचाई पर ले जा सकता है। यह व्यक्तिगत आचरण से लेकर राष्ट्रीय चरित्र तक का निर्माण करता है।

ब्रह्मचर्य: आत्मसंयम और मानसिक शुद्धि का मार्ग

ब्रह्मचर्य को आज सिर्फ एक धार्मिक सिद्धांत मानकर छोड़ दिया गया है, जबकि महावीर के अनुसार यह आत्म-नियंत्रण और मानसिक शुद्धता का साधन है। आज की पीढ़ी इंटरनेट, मनोरंजन और तात्कालिक सुखों के आभासी संसार में आत्मविस्मृति की ओर बढ़ रही है।

ब्रह्मचर्य का आशय यहां केवल यौन संयम से नहीं है, बल्कि समग्र इंद्रिय-नियंत्रण से है। जब मनुष्य अपने इच्छाओं पर नियंत्रण करना सीख जाता है, तभी वह सच्चे अर्थों में स्वतंत्र होता है।

समवेदना और जीवदया: पर्यावरण और प्राणी मात्र के लिए सहअस्तित्व

महावीर का संदेश केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं था। उन्होंने समस्त प्राणियों के प्रति करुणा और दया की बात कही। आज जब हम जंगलों को काट कर विकास की सीढ़ियाँ चढ़ रहे हैं, जानवरों के आवास छीन रहे हैं, और पर्यावरण को विनाश की ओर ले जा रहे हैं — तब यह संदेश हमारी चेतना को झकझोरता है।

जीवदया न केवल अहिंसा की भावना है, बल्कि यह पर्यावरणीय संतुलन और पारिस्थितिकी की रक्षा का आधार भी है। महावीर के सिद्धांतों को अपनाना, एक हरित, टिकाऊ और सह-अस्तित्व पर आधारित दुनिया के निर्माण की ओर कदम है।

मानवाधिकार, न्याय और सामाजिक समानता

आज जब दुनिया जाति, लिंग, धर्म, और आर्थिक असमानता की खाई में उलझी है, तब महावीर का यह विश्वास कि हर जीव आत्मा है और हर आत्मा समान है — सामाजिक न्याय का सशक्त आधार बन सकता है। जैन दर्शन में किसी को नीच या उच्च नहीं माना जाता; सबको मोक्ष का अधिकार है। यही भावना आज के सामाजिक आंदोलनों और मानवाधिकार की मांगों की आत्मा हो सकती है।

"अगर आप समृद्ध होना चाहते हैं तो पहले स्वयं को मानसिक रूप से समृद्ध बनायें।"

आदमी समृद्धि तो चाहता है मगर अहंकार नहीं छोड़ना चाहता।

वह अहंकार के रूप में समृद्धि को पाना और भोगना चाहता है।

यदि कोई समृद्ध परिवार में जन्मा है तब तो ठीक है बिना किये ही सब मिल जाता है। ऐसा नहीं है और अभाव है तो अभाव पूर्ति करनी पड़ती है और उसमें संघर्ष है। आदमी सोचता है क्या केवल संघर्ष ही उपाय है? संघर्ष के विषय में सोचा जा सकता है जैसा कि कई लोग सोचते हैं।इसमें खामी एक ही है वह यही कि संघर्ष में अहंकार अपना स्थान बना लेता है। वही संघर्ष करता है साथ में दिमाग भी लगाता है। अहंकार अनिवार्य रुप से खंडित होता है। खंडित अहंकार सभी चीजों को तोडता है, बांटता है। वह कदाचित सफल भी हो जाय तब भी पूर्णता, स्थिरता का अभाव बना रहता है। इसलिए ज्ञानी जन उपाय बताते हैं।'पहले आप स्वयं को मानसिक रुप से समृद्ध बनायें।' तात्पर्य है अभाव की धारणा मिटाकर आप सदैव समृद्ध बने रहें। यह एक प्रकार से मानसिक समृद्धि को समर्पित हो जाना है। यह ऐसा है जैसे भक्त पूरी तरह से भगवान को समर्पित हो जाता है। इससे खंडित अहंकार विलीन हो जाता है। आप मानसिक समृद्धि को समर्पित हैं तो खंडित अहंकार नहीं होगा, केवल समृद्धि होगी जो आपके बोलने, सुनने, चलने, फिरने में झलकेगी। एक अमीर आदमी हीन भावना से ग्रस्त नौकर का तिरस्कार कर सकता है लेकिन यदि वह नौकर हीन भावना से ग्रस्त नहीं है तो? वह समझा हुआ है, सुलझा हुआ है, आत्मविश्वास से युक्त है तो उसका तिरस्कार नहीं किया जा सकता। वह अपनी सेवाएं दे रहा है। लेन-देन का समझौता है।

अपने को अमीर माननेवाला व्यक्ति अहंकार वश उससे दुर्व्यवहार नहीं कर सकता।

सारे उपद्रव अज्ञान के, नासमझी के ही हैं। वास्तविक समृद्धि और ही चीज है। जंगल में बनी झोंपड़ियों में बैठे ऋषि मुनियों के चरणों में आकर माथा टेकते थे बड़े बड़े सम्राट। उधर भौतिक समृद्धि इधर आध्यात्मिक समृद्धि। क्या जो आध्यात्मिक रुप से समृद्ध है वह भौतिक रुप से समृद्ध नहीं हो सकता? हो सकता है। उसका आधार बडा है। वह बाधाओं से मुक्त है। उसकी परम ऊर्जा अबाधित है।

कृष्ण अर्जुन को स्थित प्रज्ञ होने के लिए कहते हैं। यह समाधि अवस्था है परमात्मा को प्राप्त होने से प्रकट इसमें अहंकार अपने तामझाम -अपनी बुद्धि, अहंबुद्धि सहित पूरी तरह से अनुपस्थित होता है। भौतिक जगत में भी सफलता समर्पण में ही है। बस खंडित,अलग थलग खडा अहंकार नहीं होना चाहिए।

वह अपना हिसाब किताब चलाता है। वह कहता है-पास में पैसा तो है नहीं, समृद्ध की तरह रहेंगे तो हंसी होगी। वह सिकुड जाता है लेकिन जो संदेश के मर्म को समझता है वह खंडित अहंकार की परवाह किये बगैर मानसिक -हार्दिक समृद्धि को पूरी तरह से समर्पित हो जाता है।

तब वह समृद्धि उसके बोलने, उठने बैठने में हर चीज में झलकने लगती है। आकर्षण का नियम काम करने लगता है।लोग उसकी ओर आकर्षित होने लगते हैं। उसके काम आने लगते हैं।

आत्मविश्वास से भरा आदमी नेता बन जाता है। हां, कोई अमीर तो हो मगर कृपण हो, अनुदार हो, घमंडी हो तो लोग उसे पसंद नहीं करते। केवल पैसा ही पर्याप्त नहीं है और भी चीजें जरुरी हैं सुखी, सम्मानित जीवन जीने के लिए। जिन्हें गरीब माना जाता लेकिन जो सबकी उदार भाव से सेवा करते रहे, वे हृदय सम्राट हो गये। एक बंधु साधारण कपड़े पहनते मगर साधु संतों की खूब सेवा करते।

साधु भी उनका नाम पूछते हुए आते।वे मिल गये तो अब फ़िक्र नहीं, भोजन व्यवस्था हो ही जायेगी। उन सेवा करने वाले का ध्यान अपनी तरफ बिल्कुल नहीं था। उनका खंडित अहंकार सेवाभाव में समा चुका था जैसे दूध में शक्कर घुल जाती है।

वे कर्मयोगी थे। प्यारेलाल उनका नाम था। यथा नाम तथा गुण सेवा रुपी कर्म के माध्यम से वे वास्तविक हृदय सम्राट,सबके प्यारे ईश्वर से जुडे हुए थे। अभाव की तरफ उनकी दृष्टि ही नहीं थी।

उनका होना ही काफी था। क्या यह होना कोई साधारण बात है?

यह ईश्वर है। सबका होना, ईश्वर का होना है। ईश्वर का होना, सबका होना है। यह व्यापक है,विराट है इसमें क्षुद्र, सीमित, संकुचित अहंबुद्धि का क्या काम? इसे तो समर्पित हो जाना चाहिए। यह अगर दूसरों की मान्यता की परवाह किये बिना सचमुच मानसिक -हार्दिक समृद्धि को समर्पित हो जाय तो इसका परिणाम देखा जा सकता है। यह स्वयं में राजयोग की सिद्धि है। सदैव स्वयं के निर्णय, स्वयं की आत्मस्थिति, आत्मविश्वास ही तो काम आते हैं।शंका, संदेह, अविश्वास (नकारात्मक पर विश्वास) तो क्षुद्र, खंडित अहंबुद्धि का ही काम है। उसे लगता है उसे सब समझ में आता है मगर उसकी तथाकथित समझ, नासमझी से ज्यादा कुछ नहीं होती। उसमें समर्पित होने का साहस नहीं होता।वह रास्ता रोक देती है।

लेकिन जो सचमुच हार्दिक रुप से समृद्ध है सफलता उसके साथ साथ चलती है। स्वयं को बदले बिना, परिस्थितियों को कैसे बदला जा सकता है? जो लोग परिस्थितियों के बदलने की प्रतीक्षा में लगे रहते हैं वे पिछड जाते हैं। जो प्रस्तुत हो जाते हैं उनमें सफलता प्रकट होने लगती है। अपने हाथ जगन्नाथ - यूं ही नहीं कहा। स्वावलंबन, परमात्मा का अवलंबन ही है।

इसलिए यह सूत्र गहराई से समझने और अमल में लाने जैसा है- ₹If you want to become rich, first make yourself mentally rich.₹

जो अपने भीतर आदर का अनुभव करता है उसका बाहरी वातावरण भी आदर से भर जाता है अपने आप।

जैसा भीतर वैसा बाहर-
यह सच है।
इसमें बड़ी शक्ति है-
आत्मशक्ति।

सबका आधार सबके भीतर है तो उपलब्ध है, कभी कभी नहीं, हर वक्त, हर पल, हर क्षण भीतर मौजूद। जो सदा सबके साथ है वह ईश्वर है।

राष्ट्रीय पालतू दिवस

11 अप्रैल को राष्ट्रीय पालतू दिवस उन पालतू जानवरों को समर्पित है जिन्हें हमेशा वह साथ और ध्यान नहीं मिल पाता जिसके वे हकदार हैं। जबकि हम अपने पालतू जानवरों से हर दिन प्यार करते हैं, यह दिन अनाथ पालतू साथियों की मदद करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इससे उनके स्वास्थ्य में सुधार होगा और उन्हें गोद लेने के अवसर बढ़ेंगे।

राष्ट्रीय पालतू दिवस

कभी-कभी उनके मानव साथी स्वस्थ नहीं होते। यह सुनिश्चित करना कि उनके हमेशा प्यारे दोस्तों को सबसे अच्छी देखभाल मिल रही है, तनाव और चिंता को दूर करने में मदद करेगा।

राष्ट्रीय पालतू दिवस आपके पालतू जानवरों की कुछ जांच करने का एक उत्कृष्ट समय है।

अपने स्थायी परिवार के सदस्य के खिलौनों की जांच करें। जो भी वस्तुएं अब सुरक्षित नहीं हैं, उन्हें फेंक दें।

अपने घर को पालतू जानवरों के अनुकूल बनाए रखें। अपने चार पैरों वाले दोस्तों से तार और विषाक्त पदार्थों को सुरक्षित रखें। इसमें फ़ोन चार्जर भी शामिल हैं।

यह सत्यापित करें कि टीकाकरण कब होना है और यदि होना है तो अपडेट करने के लिए अपॉइंटमेंट निर्धारित करें।

कॉलर की जांच करके सुनिश्चित करें कि टैग सुरक्षित हैं और नंबर वर्तमान हैं। जब हम कहीं जाते हैं या नंबर बदलते हैं तो हम कभी-कभी इस जानकारी को अपडेट करना भूल जाते हैं।

राष्ट्रीय पालतू दिवस कैसे मनाएं?

आश्रय गृहों में रहने वाले पालतू जानवरों के लिए आवश्यक सामान ले जाएं।

किसी पालतू जानवर वाले मित्र की सहायता करें जो बीमारी से उबर रहा हो।

एक पालतू जानवर अपनाएं।

अपने पालतू जानवरों को नहलाकर और मालिश करके अतिरिक्त प्यार दें।

राष्ट्रीय पालतू दिवस का इतिहास

सेलिब्रिटी पालतू जीवनशैली विशेषज्ञ और पशु कल्याण अधिवक्ता कोलीन पैगे ने 2005 में इस दिवस की स्थापना की थी।

पालतू जानवर दिवस: एक नजर

प्रश्नः पालतू जानवर रखने से क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ आती हैं?

उत्तरः पालतू जानवरों के मालिक जानते हैं कि कुछ पालतू जानवरों को दूसरों की तुलना में ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत होती है। हालाँकि, हर पालतू जानवर को उचित देखभाल और ध्यान दिए जाने का हक है। पालतू जानवर रखने की कुछ ज़रूरतें इस प्रकार हैं:

पालतू जानवरों को उनकी ज़रूरत के हिसाब से खाना खिलाना। ज़्यादातर पालतू जानवरों (जैसे कुत्ते और बिल्लियाँ) को आम तौर पर दिन में दो बार खाना खिलाने की ज़रूरत होती है। अन्य पालतू जानवरों को कम या ज़्यादा बार खाना खिलाने की ज़रूरत हो सकती है।

मीठे पानी तक पहुंच.

आराम करने के लिए एक सुरक्षित स्थान.

प्रतिदिन व्यायाम करें.

नियमित जांच, टीकाकरण, और बीमार होने पर चिकित्सा देखभाल।

प्रेम, स्नेह, सामाजिक संपर्क।

प्रशिक्षण।

सौंदर्य

क्रोध में बोला गया एक कठोर शब्द, प्रेम से भरी हजार बातों को भी एक क्षण में नष्ट कर सकता है

इसलिए अपनी बोली गईं हजार प्यारी बातों को नष्ट होने से बचाएं। एकांत में शिक्षा होती है, भीड़ में परीक्षा होती है। सुखी रहने के लिए यदि हम अपने खर्चों और जुबान पर नियंत्रण रखें तो काफ़ी समस्याएं आसानी से हल हो जायेगीं। मिलने के लिए, आकाश बनकर झुकना आ जाता है क्युंकि वह जानता है कि धरती उठ नहीं सकती। वास्तव में, जीवन में हमें थकान कभी भी काम की अधिकता के कारण नहीं होती, बल्कि चिंता, भय, असहयोग, तिरस्कार, अपमान और असंतोष के कारण होती है इसलिए हमें जीवन में दूसरे के जैसा बनने/होने की आवश्यकता नहीं होती अपितु एक दूसरे के लिए, हमारा होना जरूरी होता है।

विनम्र, सम्मान, क्षमा व धन्यवाद

थका हुआ मनुष्य स्वयं है और चार्ज मोबाइल को कर रहा है। जीवन में कोई ₹+₹ करता है, कोई ₹−₹ करता है, कोई ₹×₹ करता है, कोई ₹÷₹ करता है। बस परमेश्वर है जो समय आने पर सब ₹ = ₹ कर देता है।

विनम्रता से बोलना, एक दुसरे का आदर करना, क्षमा माँगना और धन्यवाद करना, ये चार गुण जिसके पास है, वो हर किसी के दिल पर राज करता है। प्राप्त को ही पर्याप्त माने तो ही प्रसन्न रहेंगे।

1. पद मिले प्रतिभा न रहे तो धृतराष्ट्र बनते,
2. प्रतिभा रहे पद न मिले तो कर्ण

जिनके पास साधन नहीं, धन नहीं, बल नहीं है तो भी कोई चिंता की बात नहीं, अपना आत्मबल बचाकर रखना है अंत मे बस यही काम आएगा।

1% Luck, 1% Talent, 98% Never Give Up = 100% Success Formula.

1. शरीर से प्रेम है तो आसन करें,
2. साँस से प्रेम है तो प्राणायाम करें,
3. आत्मा से प्रेम है तो ध्यान करें और
4. परमात्मा से प्रेम है तो समर्पण करें।
5. अगर हम स्वस्थ हैं तो भाग्यशाली हैं
6. संतुष्ट हैं तो धनवान हैं
7. शांत हैं तो सुखी हैं
8. दया करुणा परोपकार के भाव रखते हैं तो श्रेष्ठ है।

हम बदलें तो दुनिया बदले

महर्षि काकभुशुण्डि

जितना अज्ञान मूलक व्यवहार हमने अपने पूर्वजों, अपने इतिहास के साथ किया है उतना किसी सभ्यता या राष्ट्र ने नहीं किया। वे अपने कंकड़ को भी पहाड़ बताते हैं और हम अपने ब्रह्मवेत्ता ऋषियों को भी काग, कौवा बताने कहने से नहीं चूकते! एथेंस की कुल आबादी ही उस समय पांच हज़ार थी जब सुकरात चौराहों पर खड़ा होकर कुछ बोलता था। पांच दस सुनने वाले रहते थे, फिर भी उन्होंने सुकरात को दर्शनशास्त्र का पिता बना दिया। हमने क्या किया? झूठी गप्पों कथाओं के माध्यम से ब्रह्मवेत्ता, महाबलशाली, आदित्य ब्रह्मचारी, संगीत शास्त्र के तीन महान आचार्यों में से एक श्रीराम, भक्त हनुमान को बंदर बना लिया, महर्षि काकभुषुण्डि को कौवा मान लिया। महर्षि श्रृंगी कहते हैं कि वे अंगिरस गोत्रीय महर्षि रेणुकेतु प्रवाहण के पुत्र थे, बचपन में जब वे महर्षि श्रुति के आश्रम में पढ़ते थे तब उनका नाम था ब्रह्मचारी सोजनी। कागा नाम पड़ने के पीछे एक मधुर कथा है, जब वे बालक थे तब अपने भोजन के पात्र के अलावा माता और पिताजी के पात्रों को भी झूठा कर देते थे चखकर। हंसी हंसी में माता ने कहा जैसे कागा पेट भरा होने पर भी कई जगह चोंच मारता है ऐसे ही यह नटखट बालक है, तो वे बालक को कागा बुलाने लगी।

जब वे सोजनी ब्रह्मचारी श्रुति ऋषि के आश्रम में वेदाध्ययन कर रहे थे तब किसी भी बात का जवाब एकदम सटीक और तुरन्त देते थे, आजकल जिसको प्रत्युतपन्न मति हाज़िरि जवाबी या टॉप आई क्यू बोलते हैं। सामान्य संस्कृत का परिचय रहने वाला भी जानता है कि संस्कृत में बंदूक को भुशुण्डि बोलते हैं। तो उनके सहपाठी ब्रह्मचारी महर्षि लोमश ने उन्हें उनकी प्रत्युतपन्न मेधा के कारण गोली की तरह जवाब देने वाला यानी एकदम फायर करने वाला, भुशुण्डि कहने लगे। महर्षि काकभुशुण्डि आयुर्वेदाचार्य तो थे ही। वर्णन आता है कि जब वे प्रभु श्रीराम से मिले उस समय उनकी उम्र 684 वर्ष थी। महाराजा राम ने जब कहा कि हे महर्षि आप तो आयुर्वेद के बारे में सब कुछ जानते हैं, इतना आपने कैसे जाना? तब महर्षि काकभुशुण्डि ने कहा कि हे राम, मैंने 400 वर्ष आयुर्वेद के अध्धयन और औषधियों की खोज में लगाए हैं फिर भी मैं बहुत कम ही जानता हूँ। आयुर्वेद पर एक महान ग्रन्थ चन्द्रयाणकृत पोथी की रचना की उन ऋषि ने। बाद में विज्ञान में रुचि और शोध बुद्धि के चलते ब्रह्मांडो और गलेक्सीयों की गणना और खोज पर एक सविता नामक महान ग्रन्थ रचा, आजकल हॉलीवुड फिल्मों में देखते हैं कि एक ऐसी मिसाइल छोड़ते हैं जो टारगेट के पीछे लगी रहती है। टारगेट कितना भी मुड़ तुड़ जाए एकदम दिशा बदलकर उल्टा घूम जाए वह पीछे ही लगी रहती है। महर्षि श्रृंगी कहते हैं कि महर्षि काकभुशुण्डि ने उस समय एक ऐसे ही यंत्र का आविष्कार किया था जिसका नाम कागाम चथवेतु यंत्र था, जिसको बनाने की प्रेरणा उन्हें कौवे को ऐसे उल जलूल उड़ते देखकर मिली। ऋषियों का एक मत यह भी है कि उस कागाम चथवेतु यंत्र के कारण ही इनका नाम काग पड़ा, भुशुण्डि तीव्र मेधा के चलते। पता नहीं कैसी पामर बुद्धि होती है जो अपने पूर्वजों को कौवे बंदर बनाने पर तुल जाती है और मजा ये कि हम मान भी बैठते हैं। वामपंथियों के लिखे कूड़े कर्कट से बाहर निकलकर अपने पराक्रमी पूर्वजों, ब्रह्मवेत्ता ऋषियों को जानें, उनका व्यापक अध्धयन करें।

काशी की रात

चिताएं जल रही हो और नगरवधुएं नृत्य कर रही हो तो आप काशी की सबसे रहस्यमयी रात के साक्षी हैं।

श्मशान में ये कैसी साधना है? 2 मिनट का यह थ्रेड आपके रोंगटे खड़े कर देगा, श्मशान में मोक्ष मांगती नगरवधुओं, जहां मृत्यु के सामने नाचती है आत्मा, जहां अपमानित जीवन मोक्ष मांगता है।

काशी – मृत्यु की नगरी, मोक्ष का द्वार। जहां जीवन समाप्त नहीं होता, बल्कि अनंत यात्रा प्रारंभ होती है और इसी काशी की एक ऐसी अलौकिक, विचित्र और विलक्षण परंपरा है जिसे कहा जाता है - "श्मशान नाथ महोत्सव"। ₹यह काशी है यहां मृत्यु उत्सव है, चिता आरती है, और श्मशान भी साधना का स्थल है₹। यह कोई साधारण उत्सव नहीं, बल्कि एक ऐसी रात्रि है जब मणिकर्णिका घाट जहाँ निरंतर चिताएं जलती हैं वहाँ नृत्य, संगीत और साधना का अद्भुत संगम होता है। जहाँ नगरवधुएं, जिनका जीवन समाज के तिरस्कार और उपेक्षा के बीच बीतता है वह उस रात्रि को महादेव के चरणों में समर्पित कर देती हैं — मुक्ति की कामना में, नृत्य की आराधना में। अग्नि की ज्वाला के समीप, चिता की तपिश में, नटराज को साक्षी मानकर, नगरवधुएं जब घुंघरू बांधकर मंच पर आती हैं, तो वातावरण में गूंज उठती है एक पुकार, नाचते हुए आत्मा की पुकार, जो केवल शिव तक

पहुँचती है। जहाँ एक ओर शोक की चुप्पी, दूसरी ओर तेज संगीत की सुर-ताल, जिसमें घुंघरुओं की थाप और ढोलक की गूंज मिलकर अलौकिक साधना में परिवर्तित हो जाती है।

चिताओं के धुएं में जब वे नृत्य करती हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं महाकाल उन्हें देख मुस्कुरा रहे हों। यह मान्यता है कि श्मशान नाथ महोत्सव की इस पावन रात्रि में अगर कोई नगरवधू मणिकर्णिका घाट पर नृत्य करती है तो अगले जन्म में उसे फिर से नगरवधू का जीवन नहीं जीना पड़ेगा। यह एक प्रकार की आत्मिक मुक्ति है, जहाँ वे अपने समर्पण से परमपिता शिव से नया जीवन मांगती हैं। उनकी साधना, उनकी वेदना, उनकी पुकार सब कुछ केवल भगवान शिव के चरणों में महाश्मशान में मोक्ष के लिए नृत्यांजलि की परंपरा अकबर काल में आमेर के राजा सवाई मान सिंह के समय से शुरू होकर अब तक चली आ रही है। मान सिंह ने ही 1585 में मणिकर्णिका घाट पर मंदिर का निर्माण करवाया था। श्मशान नाथ उत्सव में महाश्मशान की वजह से जब कोई कलाकार संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए तैयार नहीं हुआ तो मान सिंह ने नगरवधुओं को आमंत्रण भेज बुलवाया था। वे इसे स्वीकार कर पूरी रात महाश्मशान पर नृत्य करती रही थीं तब से यह उत्सव काशी की परंपरा का हिस्सा बन गया। यह उत्सव तीन दिनों तक चलता है, जिसमें अंतिम रात विशेष मानी जाती है। यही वह रात होती है जब नगरवधुएं मणिकर्णिका घाट की चिताओं के सामने, जलते अंगारों की लौ के बीच, सम्पूर्ण रात्रि नृत्य करती हैं। यह नृत्य केवल कला नहीं, एक तपस्या होती है, जिसमें वे महादेव से अपने अपमानित जीवन से मुक्ति मांगती हैं। बनारस, मऊ, बलिया, दिल्ली, मुंबई, यहां तक कि नेपाल से भी नगरवधुएं इस साधना में भाग लेने आती हैं। समाज भले उन्हें तिरस्कार से देखे पर काशी का श्मशान और महादेव का दरबार सबको सम भाव से अपनाता है।

मणिकर्णिका घाट को यूँ ही महाश्मशान नहीं कहा जाता। यह एकमात्र ऐसा स्थान है जहां चिता की अग्नि कभी शांत नहीं होती। यहां मृत्यु को नहीं रोया जाता, बल्कि मोक्ष का उत्सव मनाया जाता है। यहां चिता पर लेटने वाला मृतक केवल मरा नहीं, मुक्त हुआ माना जाता है और जब ऐसी पावन भूमि पर एक अपवित्र मानी जाने वाली स्त्री (नगरवधू) साधना करे, तो वह भी उसी मोक्ष की अधिकारी बन जाती है। काशी के इस अनोखे महोत्सव में मृत्यु भी मूक नहीं रहती वह भी नृत्य में सम्मिलित हो जाती है। यह उत्सव बताता है कि कला, साधना, और आस्था समाज के बनाए नियमों से परे हैं। यह महोत्सव केवल एक परंपरा नहीं, - एक पुकार, एक स्वीकृति, एक मोक्ष यात्रा है।

यह सिर्फ़ एक उत्सव नहीं, एक पुकार है - उन आत्माओं की जो तिरस्कार में जीती हैं और मोक्ष की आशा में थिरकती हैं।

पीडब्ल्यूडी करेगा भूकंप जोखिम का आकलन, दिल्ली की सभी सरकारी इमारतों की होगी जांच

दिल्ली सरकार की पीडब्ल्यूडी की तरफ से इस आशय का आदेश भी जारी कर दिया गया है। इसमें बताया गया है कि हाल ही में म्यांमार में आए 7.7 तीव्रता के भूकंप के मद्देनजर भवन संहिता का सख्ती से पालन सुनिश्चित करने के लिए यह कदम उठाया गया है। इस भूकंप में वहां 3000 लोगों की जान चली गई थी।

नई दिल्ली। दिल्ली में सभी सरकारी इमारतों को भूकंप से बचाने और जानमाल के खतरे को कम करने के लिए लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने योजना बनाई है। अब सभी सरकारी इमारतों के भूकंपीय जोखिम का मूल्यांकन होगा। शुरुआत में अस्पताल, स्कूल, कॉलेज, पुलिस स्टेशन, अग्निशमन केंद्र व अन्य महत्वपूर्ण भवनों की जांच होगी। इस दौरान देखा जाएगा कि इन भवनों का निर्माण कैसे किया गया है और भूकंपरोधी क्या उपाए किए गए हैं। साथ ही, आपात स्थिति के लिए वैकल्पिक मार्ग हैं या नहीं।

पीडब्ल्यूडी की तरफ से इस आशय का आदेश भी जारी कर दिया गया है। इसमें बताया गया है कि हाल ही में म्यांमार में आए 7.7 तीव्रता के भूकंप के मद्देनजर भवन संहिता का सख्ती से पालन सुनिश्चित करने के लिए यह कदम उठाया गया है। इस भूकंप में वहां 3000 लोगों की जान चली गई थी।

सभी भवनों की स्थिति की तत्काल जांच की जाएगी

आदेश में भवनों की संरचनात्मक मजबूती और सुरक्षा को प्राथमिकता देने के लिए ठोस कदम उठाने के निर्देश दिए गए हैं। इसके तहत रखरखाव वाले सभी भवनों की स्थिति की तत्काल जांच की जाएगी। राष्ट्रीय भवन संहिता और स्थानीय उपनियमों का सख्ती से पालन होगा। नियमित निरीक्षण और उल्लंघन पर कार्रवाई को अनिवार्य बनाया गया है।

रेखा गुप्ता ने शहर की भूकंप संबंधी तैयारियों की समीक्षा की

एलजी वीके सक्सेना की अध्यक्षता वाली दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डीडीएमए) आपदाओं से निपटने के लिए नोडल एजेंसी है। पिछले महीने प्राधिकरण की बैठक हुई थी, जिसमें दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शहर की भूकंप संबंधी तैयारियों की समीक्षा की थी। उत्तर पूर्व, पूर्व और दक्षिण दिल्ली के घनी आबादी वाले इलाकों को अधिकारियों ने उस बैठक में एक बड़ी चिंता के रूप में चिह्नित किया था, क्योंकि इन इलाकों में अनधिकृत निर्माण से निवासियों को खतरा है। आदेश में आगे कहा गया है कि बिल्डिंग कोड का अनुपालन ₹अनिवार्य नीतिगत अनिवार्यता₹ होनी चाहिए।

30 अप्रैल को जारी होगी खामियों की रिपोर्ट

पीडब्ल्यूडी का कहना है कि भवनों को मजबूत करने के लिए रेट्रोफिटिंग या उन्नयन की योजना बनाई जाएगी। वर्तमान में सभी इमारतों की जांच होगी। इसके बाद रिपोर्ट के आधार पर तीन माह के भीतर इमारत को भूकंपरोधी बनाने के लिए योजना बनेगी। साथ ही, पीडब्ल्यूडी 30 अप्रैल तक एक रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा जिसमें जांच में मिली खामियों का ब्योरा होगा।

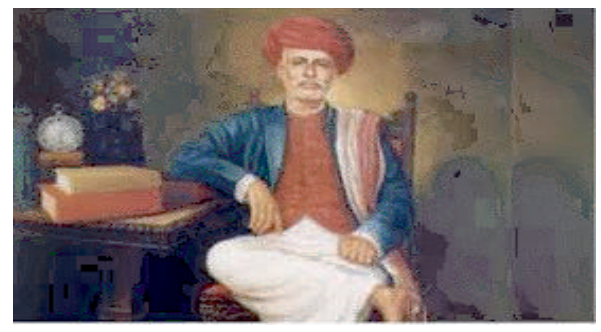

खेदपूर्ण है की अरविंद केजरीवाल - आतिशी मार्लेना - सौरभ भारद्वाज जैसे नेता दिल्ली की जनता को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नईदिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की दिल्ली में बिजली की 24 घंटे निर्बाध सप्लाई हो रही है पर दिल्ली विधान सभा चुनाव की हार से बौखलाए आम आदमी पार्टी नेता ऐसा राजनीतिक विमर्श बनाने की कोशिश कर रहे हैं जैसे दिल्ली में भारी बिजली कटौती हो रही हो।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की खेदपूर्ण है की अरविंद केजरीवाल - आतिशी मार्लेना - सौरभ भारद्वाज जैसे नेता दिल्ली की जनता को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं, जैसे पावर डिस्कॉम बिजली अपूर्ति नह कर पा रहे हों पर वह अपने कुप्रयास में सफल नही होंगे। दिल्ली की जनता दिल्ली में ही रहती है और रोज़ाना भलीभांति देख रही है की कहीं भी कोई बिजली कटौती नही हो रही है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की दिल्ली सरकार के पावर मंत्री आशीष सूद ने पहले ही स्पष्ट किया है की दिल्ली सरकार गत वर्ष की पीक पावर डिमांड से भी अधिक बिजली अपूर्ति के लिए तैयार है।

उन्होंने कहा है की शीघ्र दिल्ली की जनता कॉलोनी कॉलोनी से सामने आ कर अरविंद केजरीवाल की बिजली अपूर्ति पर झूठ एवं भ्रम फैलाने की ओछी राजनीति की पोल खोलेगी।

महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती: समानता और शिक्षा का संकल्प दिवस

"जब तक शिक्षा का प्रकाश समाज के हर कोने तक नहीं पहुँचेगा, तब तक अंधेरे में डूबी यह व्यवस्था हमें गुलामी की बेड़ियों से मुक्त नहीं होने देगी।" यह शब्द उस महान समाज सुधारक के हैं, जिन्होंने भारत के सामाजिक ढांचे को जड़ से हिलाकर एक नई चेतना का संचार किया।

महात्मा ज्योतिबा फुले—एक नाम, एक विचार, एक क्रांति—जिन्होंने जातिवाद के जंजीरों को तोड़ने, अंधविश्वास के कुहासे को हटाने और महिलाओं को उनके हक की रोशनी दिखाने का बीड़ा उठाया। उनकी जयंती, जो हर साल 11 अप्रैल को मनाई जाती है, केवल एक तारीख नहीं, बल्कि समता, शिक्षा और सामाजिक न्याय के उस संकल्प का प्रतीक है, जिसे उन्होंने अपने जीवन का आधार बनाया। आइए, उनके जीवन, कार्यों और विचारों को करीब से देखें और समझें कि आज के दौर में भी वे क्यों प्रासंगिक हैं।

महात्मा ज्योतिबा फुले का जन्म 11 अप्रैल, 1827 को महाराष्ट्र के पुणे में एक माली परिवार में हुआ। उस समय का समाज जाति और वर्ण के आधार पर बँटा हुआ था। ऊँच-नीच की भावना, छूआछूत और महिलाओं की दयनीय स्थिति सामाजिक जीवन का हिस्सा थी। ज्योतिबा का परिवार निम्न मानी जाने वाली शूद्र जाति से था, और इसीलिए उन्हें भी बचपन से सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ा। लेकिन यह भेदभाव उनके लिए हताशा का कारण नहीं, बल्कि बदलाव की प्रेरणा बना। छोटी उम्र में ही उनके मन में सवाल उठने लगे—क्यों कुछ लोग दूसरों से ऊँचे माने जाते हैं? क्यों महिलाओं को शिक्षा और सम्मान से वंचित रखा जाता है? इन सवालों ने उनके जीवन की दिशा तय की। उनकी शिक्षा का सफर भी आसान नहीं था। पारंपरिक व्यवस्था में निम्न जातियों के लिए शिक्षा का कोई स्थान नहीं था। लेकिन उनके पिता ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें पढ़ने का अवसर दिया। स्कॉटिश मिशनरी स्कूल में पढ़ाई के दौरान ज्योतिबा पश्चिमी विचारकों जैसे थॉमस पेन से प्रभावित हुए, जिनके विचारों ने उनकी सोच को और व्यापक बनाया। यहीं से उनके भीतर वह चिंगारी जली, जो आगे चलकर सामाजिक क्रांति की मशाल बनी।

महात्मा फुले का सबसे बड़ा योगदान था शिक्षा को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने का प्रयास। उनका मानना था कि अज्ञानता ही सामाजिक कुरीतियों की जड़ है। उस दौर में जब लड़कियों को पढ़ाना पाप माना जाता था, तब फुले ने 1848 में पुणे में भारत की पहली कन्या पाठशाला की स्थापना की। यह कदम उस समय की रूढ़िवादी सोच के खिलाफ एक खुला विद्रोह था। इस स्कूल को चलाने की जिम्मेदारी उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को दी, जिन्होंने न केवल शिक्षिका की भूमिका निभाई, बल्कि महिलाओं के अधिकारों के लिए एक प्रतीक बनकर उभरीं। सावित्रीबाई को स्कूल जाते समय पत्थरों और कीचड़ से हमले झेलने पड़े, लेकिन ज्योतिबा और सावित्रीबाई का संकल्प अडिग रहा। फुले ने शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखा। उनके लिए शिक्षा का मतलब था चेतना का जागरण, आत्मसम्मान का विकास और सामाजिक बराबरी की नींव। उन्होंने दलितों और शोषित वर्गों के लिए भी स्कूल खोले, ताकि वे भी अपने अधिकारों को समझ सकें और अन्याय के खिलाफ लड़ सकें। यह विचार उस समय क्रांतिकारी था, क्योंकि ब्राह्मणवादी व्यवस्था ने ज्ञान को अपने एकाधिकार में रखा था। फुले ने इस एकाधिकार को तोड़ने का साहस दिखाया और कहा, "ज्ञान सभी का अधिकार है।"

1873 में ज्योतिबा फुले ने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य था सत्य, तर्क और समानता के आधार पर समाज का पुनर्गठन। इस संगठन ने जातिगत भेदभाव, धार्मिक पाखंड और अंधविश्वास का विरोध किया। फुले का मानना था कि समाज को सुधारने के लिए हमें पहले उन ढोंगों को खत्म करना होगा, जो लोगों को गुलाम बनाए रखते हैं। सत्यशोधक समाज ने विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा दिया, बाल विवाह का विरोध किया और शूद्रों-अतिशूद्रों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। इस संगठन के माध्यम से फुले ने एक ऐसा मंच तैयार किया, जहाँ शोषित वर्ग अपनी आवाज़ उठा सकें। फुले न केवल समाज सुधारक थे, बल्कि एक प्रभावशाली लेखक भी थे। उनकी किताब 'गुलामगिरी' (1873) भारतीय समाज की गहरी आलोचना करती है। इसमें उन्होंने वर्ण व्यवस्था को गुलामी का मूल कारण बताया और ब्राह्मणवादी सोच को निशाना बनाया। फुले ने लिखा, "जब तक शूद्र और अतिशूद्र अपनी गुलामी को नहीं समझेंगे और इसके खिलाफ संगठित नहीं होंगे, तब तक वे आज़ाद नहीं हो सकते।" उनकी एक अन्य रचना 'तृतीय रत्न' एक नाटक के रूप में थी, जिसमें उन्होंने अंधविश्वास और धार्मिक ढोंग पर तंज कसा। उनके लेखन का उद्देश्य था लोगों को सोचने के लिए प्रेरित करना और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना।

फुले का मानना था कि समाज का सच्चा विकास तभी संभव है, जब उसकी आधी आबादी—यानी महिलाएँ—शिक्षित और सशक्त हों। उन्होंने महिलाओं के लिए न केवल शिक्षा की वकालत की, बल्कि विधवा पुनर्विवाह जैसे सुधारों को भी बढ़ावा दिया। उस समय विधवाओं की स्थिति बेहद दयनीय थी। उन्हें सामाजिक बहिष्कार और अपमान सहना पड़ता था। फुले ने अपने घर में एक आश्रय खोला, जहाँ विधवाओं को सम्मानजनक जीवन जीने का मौका मिला। उन्होंने बाल विवाह और सती प्रथा जैसी कुरीतियों के खिलाफ भी आवाज़ उठाई। सावित्रीबाई के साथ मिलकर उन्होंने महिलाओं को यह समझाया कि वे भी पुरुषों के समान हैं और उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए। फुले का जीवन आसान नहीं था। उनके विचारों ने उस समय की सत्ता और रूढ़िवादी समाज को चुनौती दी, जिसके कारण उन्हें तिरस्कार, विरोध और धमकियों का सामना करना पड़ा। लेकिन वे कभी पीछे नहीं हटे। उनका मानना था कि सच्चाई और न्याय के लिए लड़ाई में डर का कोई स्थान नहीं है। अपने जीवन के अंतिम दिनों तक वे समाज सुधार के लिए सक्रिय रहे। 28 नवंबर, 1890 को उनका निधन हुआ, लेकिन उनके विचार आज भी जीवित हैं।

आज जब हम 21वीं सदी में हैं, तब भी फुले के विचार उतने ही प्रासंगिक हैं। जातिवाद, लैंगिक असमानता और अशिक्षा आज भी समाज में मौजूद हैं। शिक्षा का अधिकार भले ही संवैधानिक रूप से सुनिश्चित हो, लेकिन ग्रामीण इलाकों और वंचित वर्गों तक इसकी पहुँच अभी भी सीमित है। फुले का सपना था एक ऐसा समाज, जहाँ हर व्यक्ति को बिना भेदभाव के सम्मान और अवसर मिले। उनकी जयंती हमें याद दिलाती है कि यह सपना अभी पूरा नहीं हुआ है और इसके लिए हमें निरंतर प्रयास करने होंगे। महात्मा ज्योतिबा फुले का जीवन हमें सिखाता है कि बदलाव की शुरुआत एक व्यक्ति से हो सकती है, बशर्ते उसका संकल्प मजबूत हो। वे एक दीपस्तंभ थे, जिन्होंने समाज को अंधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाने का रास्ता दिखाया। उनकी जयंती पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके दिखाए मार्ग पर चलें—शिक्षा को बढ़ावा दें, अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाएँ और समानता के लिए संघर्ष करें। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

पर्यावरण पाठशाला: तुम्हारे पास आज शक्ति हो सकती है, लेकिन समय सबसे बड़ा शासक है

- अंकुर

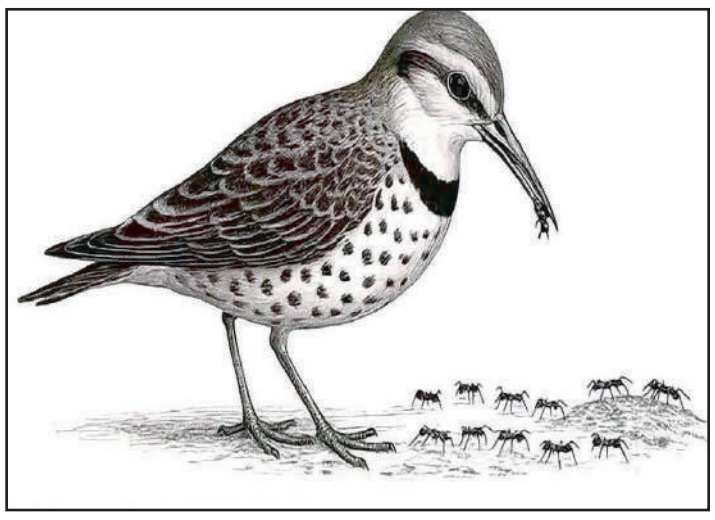

प्रकृति हमें हर दिन कुछ न कुछ सिखाती है, अगर हम ध्यान से देखें। एक वृक्ष जब बीज से अंकुर बनता है, फिर धीरे-धीरे विशाल आकार लेता है—तो वह सिर्फ एक पौधा नहीं उगाता, बल्कि हमें धैर्य, सहनशीलता और समय की महत्ता भी सिखाता है।

आज जिनके पास सत्ता, संसाधन और शक्ति है, वे अक्सर भूल जाते हैं कि यह सब स्थायी नहीं है। इतिहास साक्षी है—राजा-महाराजा हों या तानाशाह, उद्योगपति हों या राजनेता—समय ने सबको बदला है, झुकाया है और मिटाया है।

एक चिड़िया जब जीवित होती है, तो कीट-पतंगे खाती है। लेकिन प्रकृति का चक्र देखिए—जब वही चिड़िया मरती है, तो चींटियाँ और कीड़े उसे खा जाते हैं।

जीवन और मृत्यु दोनों समय के अधीन हैं। आज आप शिखर पर हैं, कल को ज़मीन पर भी हो सकते हैं।

प्रकृति कभी जल्दबाज़ी नहीं करती, लेकिन वह सब कुछ पूरा करती है।

पर्वतों की ऊँचाई, नदियों की गहराई और पेड़ों की उम्र यह दिखाते हैं कि शक्ति केवल पल की नहीं होती, वह समय की कसौटी पर परखी जाती है।

इसलिए, अगर आज तुम्हारे पास सत्ता है, सम्मान है, तो उसका उपयोग सेवा में करो, पर्यावरण की रक्षा में करो, और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर धरती छोड़ जाओ। क्योंकि समय सबका मूल्यांकन करता है, और उसकी अदालत में केवल कर्म टिकते हैं—अहम नहीं।

"पर्यावरण पाठशाला" यही सिखाती है—प्रकृति से सीखो, समय का सम्मान करो, और शक्ति का उपयोग विनम्रता से करो।

आईपीयू का 17 वाँ दीक्षांत समारोह 11 अप्रैल को, 24,456 छात्रों को मिलेगी डिग्री

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली । आईपी यूनिवर्सिटी का 17 वाँ दीक्षांत समारोह 11 अप्रैल को द्वारका कैंपस में आयोजित किया जाएगा।

यूनिवर्सिटी के परीक्षा नियंत्रक प्रो. गुलशन कुमार के अनुसार यूजी से पीएचडी तक के कुल 24,456 छात्रों को इस अवसर पर डिग्री प्रदान की जाएगी।

110 छात्रों को पीएचडी, 12 को एमफ़िल, 2,624 को मास्टर्स, 20,739 को बैचलर्स, 483 को एमबीबीएस, 488 को एमडी, एमएस एवं आयुर्वेद वाचस्पति की डिग्री दी जाएगी।

प्रो. कुमार ने बताया कि इनमें से 74 छात्रों को स्वर्ण पदक प्रदान किए जाएँगे। यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलसचिव रहे डॉ. बी. पी. जोशी की स्मृति में दिया जाने वाला एक स्वर्ण पदक भी इसमें शामिल है।

सिद्धार्थ खिटोलिया अवार्ड के अलावा अशोक साहनी एवं सुमन साहनी अवार्ड क्रमशः टेक्नोलॉजी एवं मेडिसिन के फील्ड में उल्लेखनीय योगदान के लिए दो छात्रों को दिया जाएगा।

दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति एवं दिल्ली के उपराज्यपाल श्री विनय कुमार सक्सेना करेंगे। दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, उच्च शिक्षा मंत्री श्री आशीष सूद, मुख्य सचिव श्री धर्मेंद्र एवं उच्च शिक्षा सचिव श्रीमती नंदिनी पालीवाल भी इस अवसर पर उपस्थित रहेंगे।

यूनिवर्सिटी के कुलपति पद्मश्री प्रो. (डॉ.) महेश वर्मा इस अवसर पर यूनिवर्सिटी रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे।

इंडियन नेशनल साइंस अकादमी के अध्यक्ष पद्मश्री प्रो. आशुतोष शर्मा इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि दीक्षांत भाषण देंगे।

नलिनी रंजन
जनसंपर्क अधिकारी

संस्कारशाला : हनुमान चालीसा – एक आत्मिक ऊर्जा का स्रेत

संवाददाता : प्रियंका श्रीवास्तव
अतिथि : श्री दिनेश बरेजा जी
(जिला मंत्री, विश्व हिंदू परिषद, तिलप्रस्थ महानगर – फरीदाबाद)

प्रश्न : जय श्री राम दिनेश जी, आपका स्वागत है संस्कारशाला में। आप लगातार सामूहिक हनुमान चालीसा जैसे धार्मिक आयोजनों का संचालन कर रहे हैं, यह भाव कैसे उत्पन्न हुआ?

दिनेश बरेजा जी :
जय श्री राम बहन जी। यह भाव प्रभु की कृपा और श्री हनुमान जी की प्रेरणा से उपजा है। वर्तमान समय में जब हर व्यक्ति मानसिक तनाव, अनिश्चितता और आध्यात्मिक रिक्तता से जूझ रहा है, ऐसे में हनुमान चालीसा एक ऐसा अमोघ मंत्र है जो हमें शक्ति, साहस और संकल्प देता है। सामूहिक पाठ से वह ऊर्जा और भी प्रभावी हो जाती है, जो एक व्यक्ति नहीं, बल्कि पूरे समाज को जाग्रत कर देती है।

प्रश्न : इंद्रप्रस्थ कॉलोनी में आयोजित आगामी कार्यक्रम को लेकर आपकी क्या विशेष अपेक्षाएं हैं?

दिनेश बरेजा जी :
12 अप्रैल को हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर,

श्री राम शक्ति स्थल पर 11000 बार हनुमान चालीसा के अखण्ड पाठ का आयोजन किया गया है। हम चाहते हैं कि कॉलोनी के हर घर से लोग आएं, बच्चे, युवा, महिलाएं सभी इस पावन यज्ञ में अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं। यह केवल पाठ नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, श्रद्धा और एकता का संगम है।

प्रश्न : आज के युवा इस तरह के आयोजनों से कैसे जुड़ सकते हैं?

दिनेश बरेजा जी :
बहुत सुंदर प्रश्न। युवाओं में शक्ति है, पर उस शक्ति को दिशा देने की आवश्यकता है। हनुमान जी स्वयं युवा थे—विवेक, पराक्रम और समर्पण के प्रतीक। जब युवा हनुमान चालीसा पढ़ते हैं, तो वे स्वयं में भी वही साहस, सेवा और संयम की भावना जाग्रत करते हैं। हम युवाओं से आग्रह करते हैं कि वो इसे केवल धार्मिक अनुष्ठान न समझें, यह आत्म-शुद्धि और आत्म-निर्माण की प्रक्रिया है।

प्रश्न : अंत में संस्कारशाला के पाठकों के लिए कोई संदेश?

दिनेश बरेजा जी :
जी हां, मैं यही कहूंगा कि जब आप हनुमान चालीसा पढ़ते हैं, तो वह केवल शब्दों का उच्चारण नहीं होता—वह आत्मा की आवाज़ होती है। यह पावन पाठ हमें भय से मुक्त करता है, जीवन में स्थिरता और ऊर्जा देता है। आइए, 12 अप्रैल को सुबह 10 बजे इंद्रप्रस्थ कॉलोनी के श्री राम शक्ति स्थल पर इस दिव्य अनुष्ठान का हिस्सा बनें।

जय श्री राम।

संस्कारशाला संदेश :
₹सांस्कृतिक चेतना तब ही जागती है जब हम अपने आराध्य, अपने ग्रंथ और अपने संस्कारों से जुड़ते हैं। हनुमान चालीसा उस डोर का नाम है, जो हमें अपने अंदर बसे भगवान से जोड़ती है। आइए, जुड़ें और अपने जीवन को नई दिशा दें।"

दिल्ली में पीएम-ए भीम योजना लागू, 1749 करोड़ रुपये का आवंटन; जानें क्या होंगे इसके फायदे

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-ए भीम) लागू हो गया है। इस योजना के तहत दिल्ली सरकार को 1749 करोड़ रुपये मिलेंगे जिससे 1139 आयुष्मान आरोग्य मंदिर 11 जिलों में एक-एक एकीकृत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशाला और नौ अस्पतालों में क्रिटिकल केयर ब्लॉक का निर्माण होगा। दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग ने केंद्र से यह समझौता किया।

नई दिल्ली। दिल्ली में बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने को प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-ए भीम) लागू हो गया है। इसके क्रियान्वयन के लिए केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के साथ समझौता किया। इस योजना के अंतर्गत दिल्ली सरकार को 1749 करोड़ रुपये मिलेंगे जिससे 1139 आयुष्मान आरोग्य मंदिर, 11 जिलों में एक-एक एकीकृत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशाला और नौ अस्पतालों में क्रिटकल केयर ब्लॉक का निर्माण होगा।

कार्यक्रम में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने कहा, कोरोना जैसी महामारी की चुनौती के लिए अस्पतालों को तैयार करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2021-22 में पीएम-ए भीम योजना शुरू की है। इसमें आधारभूत ढांचे के विकास के लिए केंद्र सरकार पैसे देती है, पूर्व की आम आदमी पार्टी की सरकार ने इसका लाभ नहीं उठाया।

सरकार को पांच वर्षों का काम एक वर्ष में करना होगा

दिल्ली में इसे लागू नहीं करने की मांग लेकर वह सरकार सुप्रीम कोर्ट चली गई थी। भाजपा की सरकार बनने के 50 दिनों में यह योजना दिल्ली में लागू हो गई। यह योजना वर्ष 2021-22 से वर्ष 2025-26 तक के लिए है इसलिए इस सरकार को पांच वर्षों का काम एक वर्ष में करना होगा।

मोहल्ला क्लीनिक की जगह आरोग्य मंदिर

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा पूर्व की आप सरकार की नाकामी के कारण दिल्ली के अस्पतालों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव है। नालों पर पोर्टा कैबिन में मोहल्ला क्लीनिक खोल दिया गया जिसमें सुविधाएं नहीं हैं। आयुष्मान आरोग्य मंदिर में मरीजों के सभी तरह के उपचार, एकीकृत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशाला में मरीजों को जांच की सुविधा मिलेगी। प्रमुख अस्पतालों में क्रिटिकल केयर ब्लॉक उपलब्ध होंगे।

केंद्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने कहा, 'राजनीतिक स्वार्थ के कारण आप सरकार ने प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना के लाभ से दिल्लीवासियों को वंचित रखा था। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने कहा, प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना दिल्ली के स्वास्थ्य क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव होगा।'

इस अवसर पर दिल्ली सरकार के मंत्री प्रवेश वर्मा, आशीष सूद, मनजिंदर सिंह सिरसा, रविंद्र इंद्राज, सांसद मनोज तिवारी, रामवीर सिंह बिधूड़ी, योगेंद्र चांदोलिया व बांसुरी स्वराज, केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव, दिल्ली सरकार के मुख्य सचिव धर्मेंद्र सहित अन्य अधिकारी व दिल्ली के विधायक उपस्थित थे।

दिल्ली में फर्जी हवाई टिकट के बड़े रैकेट का भंडाफोड़, 20 से ज्यादा को बनाया था शिकार; ऐसे खुला राज

इंटरनेट मीडिया पर सस्ते दाम में हवाई जहाज टिकट देने का झांसा देकर 20 लोगों को ठगने वाले गिरोह का भंडाफोड़ हुआ है। बाहरी उत्तरी जिले के साइबर थाना पुलिस ने ठगी गिरोह के सरगना समेत दो को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में पता चला कि सरगना मुंबई में भी साइबर ठगी मामले में गिरफ्तार हो चुका है। इस मामले में आगे की कार्रवाई की जा रही है।

दिल्ली। इंटरनेट मीडिया पर आफर में सस्ते दाम में हवाई जहाज टिकट देने का झांसा देकर 20 लोगों को ठगने का मामला सामने आया है। बाहरी उत्तरी जिले के साइबर थाना पुलिस ने ठगी गिरोह के सरगना समेत दो को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में पता चला कि इससे पहले सरगना मुंबई में भी साइबर ठगी मामले में गिरफ्तार हो चुका है।

जेल से बाहर आने के बाद अपना नया ठिकाना दिल्ली में बनाकर फिर से ठगी करने लगा। सरगना की पहचान सलमान सईद सिद्दीकी और रोहित राजाराम के रूप में हुई है। पुलिस ने इनके कब्जे से 12 मोबाइल, तीन लैपटॉप, 22 डेबिट और क्रेडिट कार्ड, 6 चेकबुक, 4 वाईफाई राउटर, एक टैब फोन, एक वाईफाई पॉड, स्टाम्प और तीन सिम कार्ड बरामद किए हैं।

अब तक 20 लोगों से कर चुके ठगी

पूछताछ के दौरान आरोपित ने खुलासा किया कि दिल्ली में अब तक वह 20 लोगों से ठगी कर चुका है। पीड़ित लोगों से कुल कितने रुपयों की ठगी हुई है, पुलिस यह जानकारी जुटाने का प्रयास कर रही है। बाहरी उत्तरी जिला पुलिस उपायुक्त निधिन वाल्सन ने बताया कि 19 नवंबर 2024 में नेशनल क्राइम पोर्टल पर सिरसपुर निवासी राजीव चोपड़ा ने ठगी से संबंधित एक शिकायत दर्ज कराई थी।

बताया कि उन्होंने फेसबुक पर दिल्ली से टोरंटो के लिए सस्ते दामों पर हवाई टिकट का विज्ञापन देखा। जिसपर एक लिंक था। जिसको क्लिक करते ही सीधा वह एक वाट्सएप नंबर पर पहुंच गए। जहां ठगों ने उन्हें सस्ते दाम पर कनाडा का टिकट देने की बात कही और फिर यात्रा संबंधित पूरी जानकारी ली।

पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर दर्ज किया मुकदमा

आरोपितों ने सबसे सस्ती कीमत पर दिल्ली से टोरंटो का हवाई टिकट बुक करने के बाद पीड़ित से करीब 48 हजार रुपये अपने खाते में ट्रांसफर करवा लिए। जांच के दौरान टिकट फर्जी निकला। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज कर साइबर थाना एसएचओ रमन कुमार सिंह के नेतृत्व में एक टीम गठित की गई।

टीम ने संदिग्ध नंबरों और बैंक खातों में पंजीकृत मोबाइल नंबरों की काल डिटेल प्राप्त की। जिसके जरिए पुलिस टीम ने मुंबई के चर्नी रोड और विरार ईस्ट पहुंची। जहां आरोपित रोहित राजाराम घनेकर और सलमान सईद सिद्दीकी के बारे में जानकारी मिली। जिसके बाद पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर रोहित को मुंबई और सलमान को लाजपत नगर से गिरफ्तार कर लिया।

पूछताछ के दौरान पुलिस को पता चला कि सलमान सईद सिद्दीकी मूलरूपर से प्रयागराज यूपी का रहने वाला है। सलमान ने 12 वीं तक की पढ़ाई अपने पैतृक स्थान से की। पढ़ाई पूरी करने के बाद हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। फिर उसने ट्रैवल्स एंड टूरिज्म पर आधारित रहेजा सेंटर मुंबई में नौकरी की।

2021 में दिल्ली के जनपथ में खोली थी ट्रैवल्स एंड टूरिज्म एजेंसी

साथ ही मुंबई के मरोल में इंडो-सऊदी ट्रैवल्स और फेयर वाश ट्रैवल्स में भी काम किया। फिर 2021 में वह दिल्ली के जनपथ में अपनी ट्रैवल्स एंड टूरिज्म एजेंसी खोली। कारोबार में घाटा होने के बाद वह मुंबई जाकर साइबर ठगी करने लगा। वर्ष 2023 में वह एक अंतरराष्ट्रीय हवाई टिकट घोटाले के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया।

वहीं उसका सहयोगी रोहित महाराष्ट्र के रायगढ़ का रहने वाला है। रोहित ने 10 वीं तक की पढ़ाई करने के बाद 2012 में मुंबई आ गया। अपने घर की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए वह जालसाजों के लिए फर्जी बैंक खाते और सिम कार्ड का इंतजाम करने लगा।

फेसबुक पर फर्जी ट्रैवल एजेंसी का दिया विज्ञापन

पुलिस अधिकारी के मुताबिक सलमान को ग्रेटर मुंबई के सहार थाना पुलिस ने 2023 में साइबर ठगी मामले में 16 आरोपितों के साथ गिरफ्तार किया था। वहां भी सस्ती अंतरराष्ट्रीय टिकटें देने का लालच देकर ठगी करता था। जेल से निकलने के बाद उसने अपना ठिकाना मुंबई से बदलकर दिल्ली कर लिया। उसने फेसबुक पर अपने फर्जी ट्रैवल एजेंसी का विज्ञापन दिया।

दिल्ली में कारोबार करना हुआ महंगा, लाइसेंस शुल्क में 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी

राजधानी दिल्ली में व्यापार करना अब और महंगा हो गया है। एमसीडी ने हेल्थ ट्रेड लाइसेंस जनरल ट्रेड लाइसेंस और स्टोरेज चार्ज के शुल्क में 15% की वृद्धि कर दी है। इससे दिल्ली में रेस्तरां संचालन से लेकर पान किराना और साइकिल रिपेयरिंग से लेकर मोटर साइकिल रिपेयरिंग समेत अन्य कई सेवाओं के लिए लाइसेंस लेना महंगा हो गया है।

नई दिल्ली। नए वित्त वर्ष में दिल्ली की जनता पर एमसीडी एक के बाद एक बोझ डाल रही है। कूड़ा उठाने के एवज में यूजर चार्ज लगाने के बाद एमसीडी ने अब हेल्थ ट्रेड लाइसेंस और जनरल ट्रेड के साथ ही स्टोरेज चार्ज के शुल्क में 15 प्रतिशत की वृद्धि कर दी है। इससे दिल्ली में व्यापार करना महंगा हो गया है। क्योंकि निगम ने नए लाइसेंस और लाइसेंस नवनीकरण के शुल्क में तो वृद्धि की है, साथ ही लाइसेंस के लिए एक बार लगने वाले शुल्क में भी यह बढ़ोतरी की है।

इससे दिल्ली में रेस्तरां संचालन से लेकर पान, किराना और साइकिल रिपेयरिंग से लेकर मोटर साइकिल रिपेयरिंग समेत अन्य कई सेवाओं के लिए लाइसेंस लेना महंगा होने इनके द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सेवाओं के शुल्क में भी बढ़ोतरी हो सकती है।

400 से ज्यादा ट्रेड हैं जिनके लिए लाइसेंस लेना है जरूरी

दिल्ली में व्यापार करने के लिए खास तौर पर होटल चलाना, ढाबा चलाना, रेस्तरां खोलना, काफी हाउस, फूड कोर्ट, फाइव स्टार होटल, गेस्ट हाउस, बेकरी और धर्मशाला समेत अन्य तरह के व्यापार के लिए हेल्थ ट्रेड लाइसेंस लेना जरूरी होता है। वहीं, जनरल ट्रेड लाइसेंस व स्टोरेज लाइसेंस के तहत विज्ञापन एजेंसिया, अगरबस्ती निर्माण, पशुओं के फूड, आर्ट गैलेरी, एटीएम, आटो पार्ट्स, बीपीओ काल सेंटर, स्टेशनरी शाप, मेडिकल स्टोर, कोचिंग सेंटर, सायबर कैफे, इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन, फायर फाइटिंग उपकरण, हेयर आइल, आइसक्रीम और वाटर कूलर रेफ्रीरेटर, ज्वेलरी आइटम समेत 400 से ज्यादा ट्रेड हैं जिनके लिए यह लाइसेंस आवश्यक होता है।

15 प्रतिशत की बढ़ोतरी से पड़ेगा अधिक बोझ

हेल्थ ट्रेड लाइसेंस में हुई 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी से इससे संबंधित व्यवसाय करने वालों को 1500 रुपये 75 हजार रुपये का अधिक बोझ पड़ेगा। निगम ने अपने आदेश में कहा है कि चूंकि 2022 में जब एकीकृत निगम के पूर्वकालिक निगमों के शुल्कों में एकरुपता लाकर विशेष अधिकारी ने नए लाइसेंस फीस को मंजूर किया था। इसी दौरान यह निर्णय लिया गया था कि हर तीन साल बाद शुल्क में 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी कर दी जाएगी।

निगम के आदेश बाद जनरल ट्रेड लाइसेंस में 10 वर्ग मीटर तक के दुकान के लिए ए व बी श्रेणी में 4563 रुपये का शुल्क होगा जबकि सी व डी श्रेणी के लिए यह शुल्क 3042 रुपये होगा। पहले यह शुल्क ए व बी श्रेणी के लिए 3968 रुपये था और सी व डी श्रेणी की कॉलोनी में 2645 रुपये था। इसके अलावा, 10-20 वर्ग मीटर श्रेणी में पहले ग्रुप ए और बी की कॉलोनी की दुकान में यह शुल्क 9,919 रुपये था और सी और डी श्रेणी की कॉलोनी में में 6,613 रुपये था। अब इसी समान आकार की दुकानों के लिए ए व बी श्रेणी की कॉलोनी में 11,407 रुपये और सी और डी कॉलोनियों में 7,605 रुपये देने होंगे।

हेल्थ ट्रेड लाइसेंस में कुछ प्रमुख ट्रेड में पहला और अब का शुल्क

श्रेणी	पुराना शुल्क (₹)	नया शुल्क (₹)
250 सीट तक का बैंक्वेंट हाल	10000	11500
250 सीट से अधिक वाला बैंक्वेंट हाल	25000	28750
कैंटीन व रिफ्रेशमेंट रूम	10000	11500
कैटरिंग	10000	11500
कॉफी हाउस	10000	11500
ढाबा	6000	6900
रेस्तरां (20 सीट तक)		10000
		11500
रेस्तरां (20 से 50 सीट)		20000
		23000
रेस्तरां (50 सीट से ज्यादा)		25000
		28750
होटल (तीन स्टार)	100000	115000
होटल (पांच स्टार)	500000	575000

इतनी तेजी से व्यापार और मुनाफा नहीं बढ़ रहा है उतनी जल्दी-जल्दी निगम लाइसेंस फीस बढ़ा रहा है। यह कतई उचित नहीं है। ऐसे तो दिल्ली में कोई छोटा दुकानदार व्यापार ही नहीं कर पाएगा। इससे सर्वाधिक नुकसान छोटे होटल संचालकों को होगा क्योंकि वह कोरोना के बाद से ही कई संकटों से जूझ रहे है।

– अजय अग्रवाल, अध्यक्ष, होटल महासंघ

कौन हैं पीयूष सचदेवा? जो लड़ेंगे तहव्वुर राणा का केस; डालसा ने की नियुक्ति

मुंबई आतंकी हमले के मास्टरमाइंड तहव्वुर राणा को गुरुवार को विशेष विमान से नई दिल्ली लाया गया। अब उसके केस को लड़ने के लिए दिल्ली राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण (डालसा) ने वरिष्ठ अधिवक्ता पीयूष सचदेवा को नियुक्त किया है। सचदेव एक प्रतिभाशाली वकील हैं और उनके पास अंतरराष्ट्रीय कानून और आपराधिक मामलों में गहरा अनुभव है।

नई दिल्ली। मुंबई आतंकी हमले के मास्टरमाइंड तहव्वुर राणा को विशेष विमान से गुरुवार को नई दिल्ली लाया गया। करीब पौने सात बजे विशेष विमान की लैंडिंग आईजीआई एयरपोर्ट पर हुई। कड़ी सुरक्षा निगरानी में आतंकी राणा करीब आधा घंटा तक एयरपोर्ट पर रहा। इसके बाद अधिकारी उसे कोर्ट में पेशी के लिए लेकर निकले।

केस लड़ने के लिए डालसा ने किया नियुक्त

वहीं पर अब तहव्वुर राणा का केस लड़ने के लिए डालसा (दिल्ली राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण) ने वरिष्ठ अधिवक्ता पीयूष सचदेवा को नियुक्त किया है।

मुंबई में 26/11 आतंकी हमलों के प्रमुख संदिग्ध तहव्वुर हुसैन राणा की ओर से दिल्ली राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण ने वरिष्ठ अधिवक्ता पीयूष सचदेव को कानूनी प्रतिनिधि नियुक्त किया है।

लंदन से ली एलएल.एम. की डिग्री

पीयूष सचदेवा एक प्रतिभाशाली और उभरते हुए वकील हैं। उन्होंने अपनी कानून की पढ़ाई प्रतिष्ठित आईएलएस लॉ कॉलेज, पुणे से पूरी की और उसके बाद एलएल.एम. की डिग्री लंदन के किंग्स कॉलेज से हासिल की।

उनके पास अंतरराष्ट्रीय कानून और आपराधिक मामलों में गहरा अनुभव है, जो इस संवेदनशील मामले में उनकी भूमिका को और भी महत्वपूर्ण बनाता है।

डालसा क्या है?

डालसा का मतलब है जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (District Legal Services Authority) जो कि विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987 के तहत गठित एक संगठन है। इसका मुख्य उद्देश्य समाज के कमजोर और वंचित वर्गों को फ्री कानूनी सहायता प्रदान करना है।

नकली/मिलावटी दूध का खेल: अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य को चंपत !

दूध सदियों सदियों से हमारी सनातन भारतीय संस्कृति और खान-पान का बहुत ही अहम हिस्सा रहा है। वास्तव में दूध शुद्धता और पोषण का प्रतीक रहा है। इसीलिए हमारी सनातन संस्कृति में दूध को 'अमृत' की संज्ञा दी गई है।एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार दूध उत्पादन के मामले में भारत दुनिया का नंबर-1 देश है और वैश्विक दूध उत्पादन में भारत का योगदान 24.64 प्रतिशत है। पीआईबी पर उपलब्ध एक जानकारी के अनुसार वर्ष 2022-23 के दौरान देश में कुल दूध उत्पादन 230.58 मिलियन टन था और इसी अवधि में प्रति व्यक्ति उपलब्धता 459 ग्राम प्रति दिन थी।एक अन्य उपलब्ध जानकारी के अनुसार भारत का दूध उत्पादन वर्ष 2023-24 में 4 प्रतिशत बढ़कर 239.3 मिलियन टन हो गया है, लेकिन बावजूद इन सबके आज यह एक बहुत बड़ी विडंबना ही है कि दूध में मिलावट है। देश में आए दिन नकली दूध मिलने के अनेक मामले सामने आ रहें हैं। आज अधिक कमाई के लालच में दूध में मिलावट कर मानव स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि लगभग सात-आठ साल पहले मीडिया के हवाले से यह खबरें आईं थीं कि देश में बिकने वाला 67.7 फीसदी दूध मिलावटी है।इसके पीछे उस समय तर्क यह दिया गया था कि देश में दूध का उत्पादन 14 करोड़ और खपत 64 करोड़ लीटर है। पिछले ही साल यानी कि वर्ष 2024 में एक प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक के हवाले से यह खबरें आईं थीं कि देश में नकली दूध बनाने का कारोबार चल रहा है।उस समय दैनिक ने जानकारी दी थी कि मिलावटी दूध के सबसे ज्यादा मामले उत्तर प्रदेश, केरल और तमिलनाडु में सामने आए हैं। वास्तव में सच तो यह है कि उत्तर से लेकर दक्षिण भारत तक कई राज्य ऐसे हैं जहां नकली दूध बनाने का कारोबार और बेचने का कारोबार धड़ल्ले से हो रहा है। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2023-24 में यूपी में 16 हजार से ज्यादा दूध के सैंपल पॉजिटिव पाए गए थे।इसी तरह से तमिलनाडु में 2200 से ज्यादा मामले जबकि केरल में 1300 सैंपल पॉजिटिव पाए गए थे। इतना ही नहीं, बिहार, हरियाणा, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब और मध्यप्रदेश में भी लगातार मिलावटी और नकली दूध के मामले पकड़े गए। गौरतलब है कि देश भर में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता के मामले में पंजाब सबसे आगे है, लेकिन इसके बावजूद राज्य में नकली दूध की समस्या आज भी उतनी ही गंभीर बनी हुई है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि देश के सिर्फ पांच राज्य, जिनमें क्रमशः राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात और आंध्र प्रदेश शामिल हैं, 52 फीसदी दूध का उत्पादन करते हैं। राजस्थान दूध उत्पादन के मामले में काफी आगे है, क्यों कि यहां पर अधिक संख्या में पशुपालन किया जाता है। नाबार्ड के वर्ष 2023 के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार देश में कुल उत्पादित होने वाले दूध उत्पादन में से राजस्थान 15.05 फीसदी का उत्पादन करता है, जबकि दूसरे नंबर पर उत्तर प्रदेश है, जहां कुल 14.93 फीसदी दूध का उत्पादन होता है। तीसरे स्थान पर मध्यप्रदेश है, जहां 8.06 फीसदी दूध का उत्पादन होता है। इसके बाद चौथे स्थान पर गुजरात है, जहां 7.56 फीसदी दूध का उत्पादन होता है। पांचवें स्थान पर आंध्र प्रदेश है, जहां 6.97 फीसदी दूध का उत्पादन किया जाता है। बहरहाल, क्या यह बहुत ही गंभीर और संवेदनशील बात नहीं है कि भारत में दूध का जितना उत्पादन नहीं होता, उससे ज्यादा दूध की खपत होती है ? वास्तव में एक कटु सत्य तो यह है कि आज हम दूध में

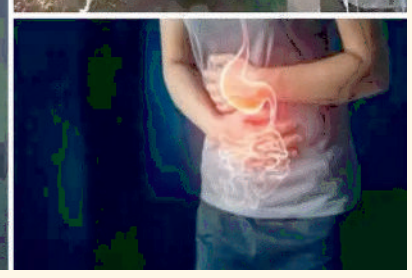

मिलावट के दौर से नकली दूध के दौर में प्रवेश कर चुके हैं। आज दूध में यूरिया, डिटर्जेंट और विभिन्न खतरनाक रासायनिक पदार्थों की मिलावट की जा रही है। इतना ही नहीं, नकली दूध बनाने में कास्टिक सोडा, सफेद पेंट, हाईड्रोपेरॉक्साइड, वनस्पति तेल, फर्टिलाइजर जैसे घातक पदार्थों का इस्तेमाल होता है। ये सभी पदार्थ मानवीय स्वास्थ्य के लिए घातक हैं और कैंसर जैसे कई घातक रोगों के कारक हैं।आज देश में मिल रहे दूध व दूध से जुड़े 80 से 90 प्रतिशत उत्पाद मिलावटी हैं। पाठकों को बताता चलूं कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट में यह बात कही गई है कि है कि अगर भारत के दुग्ध उत्पादों की जांच नहीं की गई तो इस वर्ष यानी कि 2025 तक 87 प्रतिशत भारतीय घातक बीमारियों जैसे कैंसर आदि के शिकार हो सकते हैं। विज्ञान एवं तकनीकी मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार 89.2 प्रतिशत दुग्ध उत्पादों में किसी न किसी तरह की मिलावट पाई है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि साल 2019 में, देश में कुल दुधारू पशुओं की संख्या 125.34 मिलियन थी। इनमें भी गायों की संख्या 14 करोड़ 51.2 लाख और भैंसों की संख्या 109.85 मिलियन थी, लेकिन आज एक ओर जहां भैंसों की संख्या में कमी आई है, वहीं दूसरी ओर दूध उत्पादन में इजाफा हुआ है। आज आबादी (मानव) बढ़ रही है, पशुओं की संख्या लगातार घट रही है और दूध उत्पादन बढ़ रहा है, यह हर किसी को विस्मय में ही डालता है।पशुधन (भैंसों) की संख्या में कमी के बावजूद दूध उत्पादन में वृद्धि क्या आश्चर्यजनक बात नहीं है ? उल्लेखनीय है कि भारत जैसे देश में दूध का प्राथमिक स्रोत भैंसें और गायें ही हैं, लेकिन बीते कुछ दशकों में ग्रामीण क्षेत्रों में भी पशु पालने का रुझान लगभग आधा रह गया है। शहरों में तो पशु आज के समय कोई पालना ही नहीं चाहते हैं। दरअसल, इसके पीछे कारण स्पष्ट हैं। मसलन, आज हर चीज़ में महंगाई बढ़ी है, बढ़ती आबादी के बीच शहरों ही नहीं ग्रामीण परिवेश में भी आज के समय कोई पशुपालन नहीं करना चाहते। पशुओं के साथ चारे की कीमतों में भी अभूतपूर्व इजाफा हुआ है। पशुओं के लिए इलाज सुविधाओं का अभाव है। पशुपालन के लिए कम आय भी आम आदमी का पशुपालन से मुंह मोड़ रहा है।आधुनिकता और बदलती जीवनशैली का प्रभाव पशुपालन पर कहीं न कहीं पड़ा है और पशुपालन के प्रति पहले की तुलना में रूझान काफी घटा है। आज आये दिन हम मीडिया की सुर्खियों में यह पढ़ते सुनते हैं कि फलां-फलां स्थान पर नकली व मिलावटी दूध और उससे बने उत्पादों की भारी मात्रा में बरामदगी हुई। आज दूध व दूध से बने पदार्थों/उत्पादों के नमूने फेल हो रहे हैं।सच तो यह है कि ऐसी खबरें (मिलावटी व नकली दूध की खबरें) दूध उत्पादन में वृद्धि पर कहीं न कहीं सवालिया निशान लगातीं हैं।आज पशु कहीं पर दिखाई नहीं देते, फिर भी दूध, पनीर, दही तथा दूध से बने अनेक उत्पाद बाजारों, माल्स आदि में धड़ल्ले से उपलब्ध हैं, जो कि काफी चिंताजनक है। बहरहाल, यह बात ठीक है कि पशुपालन, भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है और भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के बाद अहम क्षेत्र है, लेकिन सच तो यह है कि आज पशुपालन के प्रति पहले सी रूचि नहीं रही है,जिसके कारणों के बारे में इस आलेख में आप पाठकों को पहले ही अवगत कराया जा चुका है। आज से पच्चीस तीस साल पहले विशेषकर ग्रामीण परिवेश में पशुपालन लोगों का शौक था, दूध देने वाले पशु घर-परिवार, आंगन की शोभा बढ़ाते थे और उन्हें परिवार का अहम और महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता था। आज पहले सी बात नहीं रही, हम आधुनिक हो चलें हैं।आज हमें सबकुछ पैकिंग में चाहिए,दूध भी आज पैकिंग की वस्तु हो चली है, हमारे पास पशुपालन का समय नहीं बचा है, जैसा कि आधुनिकता की दौड़ में हम अंधे हो चुके हैं। न हमें अपने स्वास्थ्य का ख्याल रहा है, और न ही देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहलाने वाले पशुपालन का ही। आज दूध व्यवसाय तो बना है,दूध घरेलू इस्तेमाल से व्यवसाय तक आया है, वर्गीज कुरियन हमारे देश के 'मिल्कमैन' कहे जाते हैं।उनके नेतृत्व में भारत दूध उत्पादन में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हुआ, देश में पहले की भांति(प्राचीनकाल की भांति) दूध की नदियां बहने लगीं, लेकिन आज समय के साथ दूध के व्यवसाय में मिलावटी व नकली दूध का बोलबाला हो चुका है,जो हमारे स्वास्थ्य के लिहाज से ठीक नहीं ठहराया जा सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज जरूरत इस बात की है कि सरकारें व भारतीय किसान न केवल दूध उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान दें, बल्कि पशुपालन को सुदृढ़ करें और पशुओं के प्रति सम्मान की संस्कृति को पुर्नजीवित करें, क्यों कि हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है और पशुपालन हमारी रीढ़ है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि खेती के साथ पशुपालन हमारी आजीविका का एक प्रमुख जरिया है।नकली और मिलावटी दूध आज हमारे देश, हमारे समाज के लिए एक बड़ी चुनौती है।यह हमारे देश की अर्थव्यवस्था पर भी एक कड़ा प्रहार है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

2025 हीरो पेशन प्लस नए इंजन के साथ लॉन्च, ये भी मिले अपडेट

परिवहन विशेष न्यूज

2025 Hero Passion Plus को नए इंजन के साथ लॉन्च किया गया है। इसे जहां पहले चार कलर ऑप्शन में ऑफर किया जाता था अब यह केवल दो कलर में आएगी। नई Hero Passion Plus की एक्स-शोरूम कीमत 81651 रुपये है जो पहले के मुकाबले 1750 रुपये ज्यादा है। इसमें डबल क्रैडल फ्रेम का इस्तेमाल किया गया है जिसे टेलीस्कोपिक फोर्क और ट्विन शॉक एब्जॉर्बर सस्पेंशन सपोर्ट करते हैं।

नई दिल्ली। हीरो मोटोकॉर्प की पॉपुलर कम्यूटर बाइक 2025 Hero Passion Plus भारत में लॉन्च हुई। कंपनी ने अपनी इस मोटरसाइकिल को कई तकनीकी और उत्सर्जन मानकों से जुड़े कुछ अहम बदलाव किए गए हैं। इन बदलावों के साथ ही कीमत में भी मामूली बदलाव देखने के लिए मिला है। आइए जानते हैं कि 2025 Hero Passion Plus में क्या कुछ नया दिया गया है?

क्या है नई कीमत?

नई Hero Passion Plus (2025) की कीमत 81,651 रुपये ((एक्स-शोरूम दिल्ली) निर्धारित की गई है, जो 2024 मॉडल की तुलना में 1,750 रुपये ज्यादा है। इसके 2024 वर्जन की कीमत 79,901 रुपये थी।

डिजाइन में कोई बदलाव नहीं

2025 Hero Passion Plus का डिजाइन पहले की तरह ही है। इसे अभी भी ब्लैक फाइव-स्पोक अलॉय व्हील्स और डुअल-टोन बॉडी पेंट स्कीम्स में ऑफर किया जाएगा। इसके रंगो में थोड़े बदलाव किए गए हैं। पहले यह मोटरसाइकिल जहां चार कलर में आती थी, अब यह केवल दो कलर Black Nexus Blue और Black Heavy Grey में ही मिलेगी।

इंजन में बड़ा बदलाव

2025 Hero Passion Plus में वहीं पुराना 97.2cc, सिंगल-सिलेंडर, एयर-कूल्ड, टू-वॉल्व इंजन दिया गया है, लेकिन इसे अब OBD-2B उत्सर्जन मानकों के अनुसार अपडेट किया गया है। यह इंजन 8.02PS की पावर और 8.05Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 4-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। यह वहीं, इंजन है जिसे Hero Splendor Plus और HF Deluxe में भी इस्तेमाल किया जाता है।

अंडरपिनिंग्स और ब्रेकिंग सिस्टम

इसमें डबल क्रैडल फ्रेम का इस्तेमाल किया गया है, जिसे टेलीस्कोपिक फोर्क और ट्विन शॉक एब्जॉर्बर सस्पेंशन सपोर्ट करते हैं। इसमें ब्रेकिंग के लिए दोनों ही पहियों में 130mm ड्रम ब्रेक्स दिए गए हैं। इसमें 18-इंच के ट्यूबलेस टायर्स लगे हैं, जिसमें आगे 80 सेक्शन और पीछे 100 सेक्शन मिलता है। इसका ग्राउंड क्लीयरेंस 168mm, सीट हाइट 790mm और कर्ब वेट 115kg है।

फीचर्स और टेक्नोलॉजी

CBS (कॉम्बाइंड ब्रेकिंग सिस्टम)
मोबाइल चार्जिंग पोर्ट
फ्यूल टैंक के नीचे छोटा यूटिलिटी बॉक्स
सेल्फ-स्टार्ट और साइड स्टैंड इंजन कट-ऑफ
Hero की i3s (स्टार्ट-स्टॉप) टेक्नोलॉजी

किनसे होगा मुकाबला?

2025 Hero Passion Plus का मुकाबला भारतीय बाजार में मुख्य रूप से Honda Shine 100, Bajaj Platina 100, TVS Sport और Hero की अपनी अन्य बाइक्स – Splendor Plus और HF Deluxe से देखने के लिए मिलता है।

हीरो स्पलेंडर+ लाइनअप हुई अपडेट, नए ग्राफिक्स के साथ आई बाइक, कीमत 79096 रुपये से शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

भारत की प्रमुख दो पहिया वाहन निर्माताओं में शामिल Hero Motocorp की ओर से Hero Splendor+ लाइनअप को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक बाइक को हाल में ही अपडेट किया गया है। किस तरह के अपडेट के साथ लाइनअप को पेश किया गया है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करने वाली प्रमुख निर्माता Hero Motocorp की ओर से Hero Splendor+ लाइनअप को अपडेट दिया गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से इस बाइक को किस तरह के अपडेट के साथ बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया गया है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Hero Splendor+ बाइक को मिला अपडेट

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हीरो मोटोकॉर्प की ओर से स्प्लेंडर+ बाइक के लाइनअप को अपडेट के साथ बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया गया है। पुराने वर्जन के मुकाबले नए वर्जन को मामूली अपडेट्स के साथ पेश किया गया है।

मिले नए ग्राफिक्स

Hero Splendor+ लाइनअप को कास्मैटिक बदलावों के साथ पेश किया गया है। इसमें नए ग्राफिक्स को दिया गया है। जिससे बाइक देखने में आकर्षक हो गई है। इसके अलावा इसमें कुछ नए रंगों को भी दिया गया है। कुछ वेरिएंट्स में रियर लगेज रैक और कुछ में ज्यादा बेहतर पिलियन ग्रैब रेल दिए गए हैं।

कैसे हैं फीचर्स

बाइक के डिजाइन में और किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। इसमें पहले की तरह ही फुल डिजिटल स्पीडोमीटर, ब्लूटूथ कनेक्टिविटी, रियल टाइम माइलेज इंडीकेटर, बेहतर माइलेज के लिए Xsens FI तकनीक, i3S तकनीक, एलईडी हेडलाइट, साइड स्टैंड इंजन कट-ऑफ और फ्रंट में डिस्क ब्रेक जैसे फीचर्स को दिया जा रहा है।

कितना दमदार इंजन

Hero Splendor+ लाइनअप में इंजन को अपडेट दिया गया है। अब निर्माता की ओर से इसमें OBD2B तकनीक वाले इंजन को दिया जा रहा है। इसमें 97.2 सीसी की क्षमता का सिंगल सिलेंडर एयर कूल्ड इंजन दिया गया है। जिससे इसे 7.91 बीएचपी की पावर और 8.05 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसमें 4स्पीड गियरबॉक्स दिया गया है।

कितनी है कीमत

Hero Splendor+ बाइक की कीमत में मामूली बढ़ोतरी भी की गई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक बाइक की कीमत में 1800 रुपये से लेकर 2500 रुपये तक बढ़ाए गए हैं।

किनसे है मुकाबला

Hero Splendor+ बाइक को निर्माता की ओर से 100 सीसी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला हीरो की ही Honda Shine 100 और Bajaj Platina 100 जैसी बाइक्स के साथ होता है।

मारुति वैगन आर अब पहले से ज्यादा हुई सुरक्षित, सभी वेरिएंट में मिलेंगे 6 एयरबैग

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति वैगन आर अब पहले से ज्यादा सुरक्षित हो गई है। अब इसके सभी वेरिएंट में 6 एयरबैग्स मिलेंगे। इसमें अतिरिक्त एयरबैग्स में दो साइड एयरबैग सीट्स में और दो कर्टेन एयरबैग्स B-पिलर में दिया गया है जिससे टक्कर की स्थिति में पैसेंजर की सेफ्टी कई गुना बेहतर हो गई है। आइए जानते हैं इसके बारे में।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली हैचबैक कारों में से एक Maruti Wagon R पहले से ज्यादा सुरक्षित हो गई है। कंपनी ने इसमें बड़ा सेफ्टी अपडेट किया है। पहले इसमें जहां केवल डुअल फ्रंट एयरबैग्स दिए जाते थे, अब इसकी जगह पर इसके सभी वेरिएंट में 6 एयरबैग्स मिलेंगे, जिसकी वजह अब इसके सभी मॉडल में अतिरिक्त साइड और कर्टेन एयरबैग्स भी मिलेंगे।

Wagon R को क्या मिला नया?

Maruti Suzuki ने Wagon R के फीचर्स में किसी बदलाव के बारे में नहीं बताया है, लेकिन सुरक्षा के लिहाज से 6 एयरबैग को इसमें शामिल करना बहुत अहम माना जा रहा है। इस अपडेट के बाद Wagon R, Maruti की उन गाड़ियों की लिस्ट में शामिल हो गई है, जिसके सभी वेरिएंट में 6 एयरबैग स्टैंडर्ड हैं, जो Alto K10, Celerio, Eeco और Grand Vitara।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इसमें अतिरिक्त एयरबैग्स में दो साइड एयरबैग सीट्स में और दो कर्टेन एयरबैग्स B-पिलर में दिया गया है, जिससे टक्कर की स्थिति में पैसेंजर की सेफ्टी कई गुना बेहतर हो गई है।

सुविधाएं और सेफ्टी फीचर्स

Maruti Wagon R को पहले से ही कुछ अच्छे कंफर्ट और सेफ्टी फीचर्स के साथ ऑफर किया जाता है, जिसकी वजह से यह हैचबैक सेगमेंट में बाकी कारों से बेहतर रही है।

7-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम
एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले
4-स्पीकर ऑडियो सिस्टम
स्टीयरिंग-माउंटेड कंट्रोल्स
मैनुअल एसी
इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल ORVM
रिमोट कीलेस एंट्री
रियर वाइपर और वॉशर
सेफ्टी के अन्य फीचर्स में शामिल हैं:
ABS और EBD
इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल (ESC)
रियर पार्किंग सेंसर्स
हिल होल्ड असिस्ट
सेंट्रल लॉकिंग

कावासाकी ने बनाया मैकेनिकल रोबोट घोड़ा, क्या है इस फ्यूचरिस्टिक मशीन की खासियत

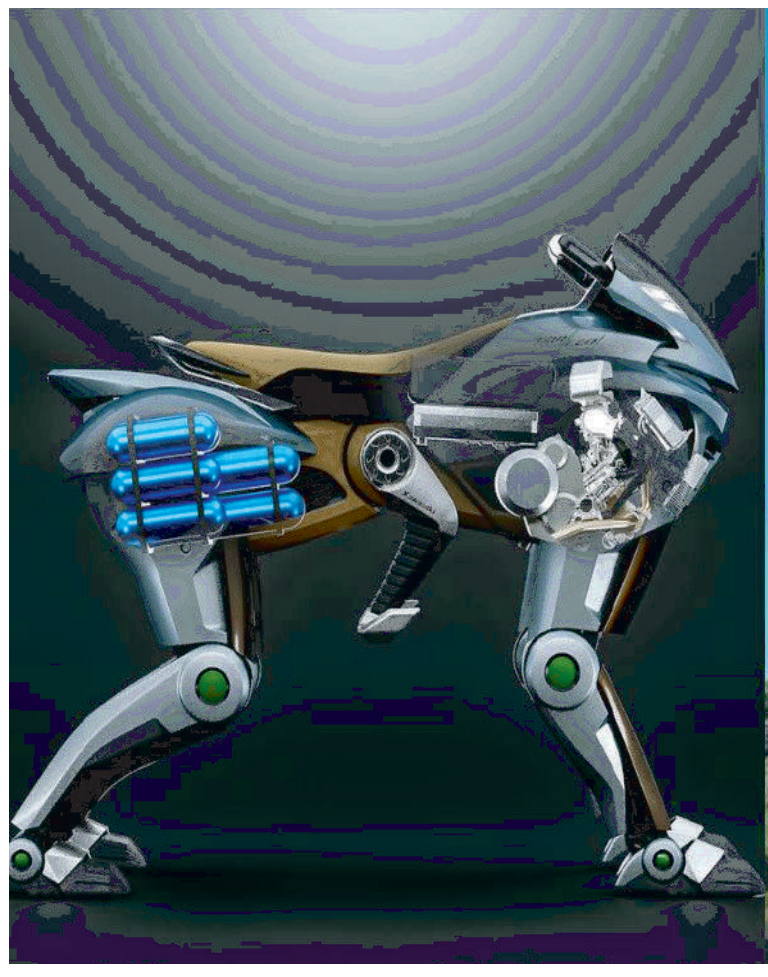

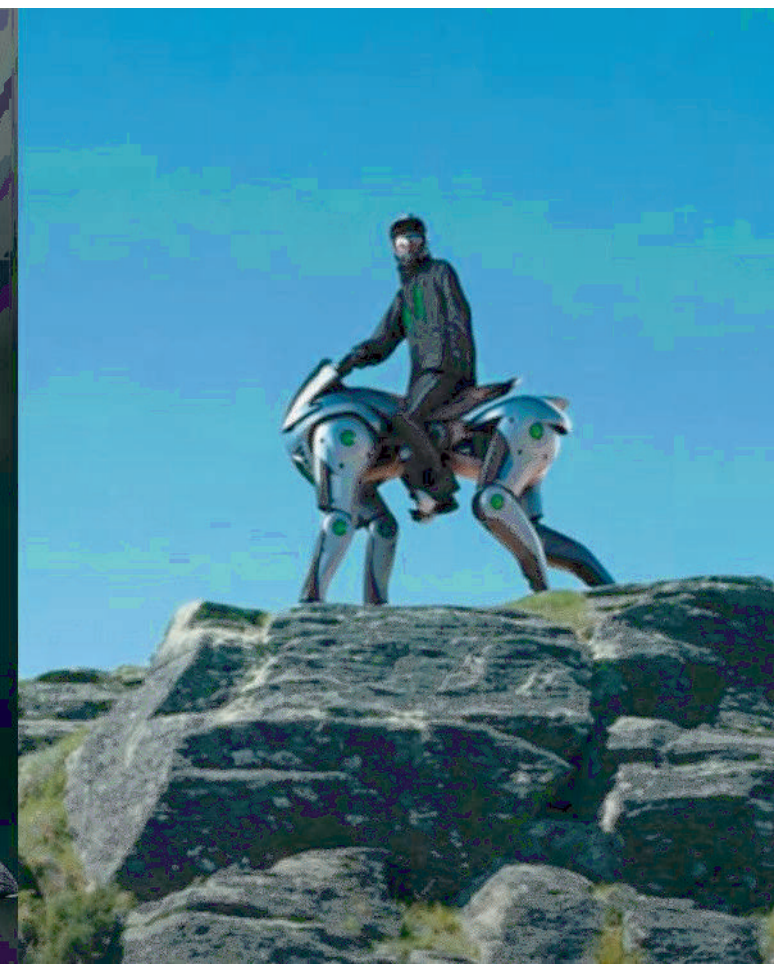

परिवहन विशेष न्यूज

हाल में जापान में Osaka Kansai Expo 2025 का आयोजन हुआ। इसमें दमदार स्पोर्ट्स बाइक बनाने वाली कंपनी Kawasaki ने मैकेनिकल रोबोट घोड़ा के कॉन्सेप्ट मॉडल को पेश किया है जिसका नाम Kawasaki Corleo है। इसे उबड़-खाबड़ इलाकों पहाड़ों और नदियों को आसानी से पार करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह उन जगहों के लिए मददगार होगा जहां पर व्हील-बेस्ड व्हीकल्स नहीं जा सकते हैं।

नई दिल्ली। अभी तक आप Kawasaki को दमदार स्पोर्ट्स बाइक बनाने वाली कंपनी के रुप में ही जाना होगा, लेकिन कंपनी ने इस बार कुछ ऐसा किया है जिसने सभी को चौका दिया है। कावासाकी ने जापान के ओसाका कान्साई एक्सपो 2025 में अगली जनरेशन की सोच को दिखाया है। यहां पर कंपनी ने एक चार पैरों वाला हाइड्रोजन से चलने वाला रोबोटिक घोड़ा के कॉन्सेप्ट मॉडल को पेश किया है, जिसका नाम Kawasaki Corleo है।

क्या है Kawasaki Corleo?

यह असल में एक चार पैरों वाला मैकेनिकल रोबोट घोड़ा है, जिसे कठिन रास्तों पर आसानी से चलने के लिए डिजाइन किया गया है। यह उबड़-खाबड़ इलाकों, पहाड़ों और नदियों को आसानी से पार कर सकता है। Kawasaki का यह कॉन्सेप्ट मॉडल एक तरह से मोटरसाइकिल की दुनिया से रोबोटिक तकनीक की ओर कंपनी के कदम को दिखाता है।

डिजाइन में मोटरसाइकिल की झलक

Kawasaki Corleo कॉन्सेप्ट मॉडल का डिजाइन ऐसा है, जिसे देखकर आप इसे मोटरसाइकिल घोड़ा कह सकते हैं। इसका सिर एक स्पोर्ट्सबाइक के फ्रंट फेयरिंग दिया गया है, जिसमें विंडस्क्रीन भी लगाई गई है। वहीं, इसकी चेस्ट पर तीन वर्टिकल लाइनें दी गई है।

इसमें एक फ्लोटिंग सीट और हैंडलबार भी दिया गया है, जिसपर राइडर सवार होकर इसे कंट्रोल कर सकता है। इस रोबोट घोड़ा को लेकर कावासाकी का कहना है कि यह राइडर के बॉडी वेट शिफ्टिंग को डिटेक्ट कर के दिशा और गति को तय करता है।

इंजन और तकनीक

जिस तरह से असली घोड़ा घास खाता है, उसी तरह यह हाइड्रोजन फ्यूल पर चलेगा। इसमें 150cc का हाइड्रोजन इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो इसके फ्रंट पैरों के बीच में लगाया गया है। यह इंजन ही इसके सभी चार पैरों तक पावर पहुंचाता है।

हाइड्रोजन कैनिस्टर को इसके पिछले हिस्से में रखा गया है, ताकि वजन का संतुलन सही से बना रहे। इसमें एक डिस्प्ले स्क्रीन भी दी गई है, जो हाइड्रोजन लेवल, सेंटर ऑफ ग्रेविटी और नेविगेशन जैसी जानकारी मिलती है।

रात में प्रोजेक्शन सिस्टम

Kawasaki Corleo कॉन्सेप्ट को रात में भी चालाया जा सकेगा, क्योंकि इसमें एक प्रोजेक्शन सिस्टम दिया है जो रास्ते पर नेविगेशन मार्कर्स प्रोजेक्ट करता है। इससे राइडर को आगे का रास्ता आसानी से समझ में आता है।

क्या है Kawasaki का मकसद?

Kawasaki के यह इनोवेशन से न केवल रोबोटिक्स और ऑटोमोटिव इंजीनियरिंग का उदाहरण है बल्कि यह भविष्य में ट्रांसपोर्ट के एक नए तरीके की ओर भी इशारा करता है। खासकर उन जगहों के लिए जहां पर व्हील-बेस्ड व्हीकल्स नहीं जा सकते, वैसी जगहों पर Corleo जैसे रोबोट्स बहुत मददगार साबित हो सकते हैं।

भविष्य के लिए भारत के किशोरों का पोषण करना

विजय गर्ग

यह किशोरावस्था को व्यक्तिगत और भावनात्मक विकास के एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में पहचानता है - नेटफ्लिक्स की हालिया श्रृंखला किशोरावस्था में एक सच्चाई को विशद रूप से कैप्चर किया गया है, जहां सांस्कृतिक और भावनात्मक जटिलताओं के बीच किशोर अपनी पहचान खोजने के लिए संघर्ष करते हैं। मानवविज्ञानी मार्गरेट मीड ने एक बार टिप्पणी की थी, ₹युवा, अपनी पहल पर कार्य करने के लिए स्वतंत्र, अपने बड़ों को अज्ञात की दिशा में ले जा सकते हैं...

गर्मियों की छुट्टियां यहां फिर से होती हैं, जो बच्चों और माता-पिता के लिए समान रूप से उत्साह और प्रत्याशा लाती हैं। हाल ही में, प्रधानमंत्री ने मन की बात के अपने 120 वें एपिसोड के दौरान 30 मार्च 2025 को प्रसारित किया, जोश के साथ स्कूलों, परिवारों और समुदायों को इन महीनों का सार्थक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। पीएम ने खूबसूरती से प्रकाश डाला कि छुट्टियां सिर्फ अवकाश से अधिक हो सकती हैं; वे युवा दिमाग में समग्र विकास का पोषण कर सकते हैं। इस संदर्भ में, यह प्रतिबिंबित करना आवश्यक है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र जैसे संस्थान भारत के भविष्य को कैसे आकार दे रहे हैं, विशेष रूप से किशोरों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। एनईपी 2020 को शिक्षा पर अपने दूरदर्शी रुख के लिए दुनिया भर में मनाया जाता है जो आधुनिक अंतःविषय प्रथाओं के साथ पारंपरिक सांस्कृतिक ज्ञान को पुल करता है।

यह किशोरावस्था को व्यक्तिगत और भावनात्मक विकास के एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में पहचानता है - नेटफ्लिक्स की हालिया श्रृंखला किशोरावस्था में एक सच्चाई को विशद रूप से कैप्चर किया गया है, जहां सांस्कृतिक और भावनात्मक जटिलताओं के बीच किशोर अपनी पहचान खोजने के लिए संघर्ष करते हैं। मानवविज्ञानी मार्गरेट मीड ने एक बार टिप्पणी की थी, ₹युवा, अपनी पहल पर कार्य करने के लिए स्वतंत्र, अपने बड़ों को अज्ञात की दिशा में ले जा सकते हैं,₹ युवाओं की क्षमता और बेचैनी को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए।

यहां, सीसीआरटी प्रभावी ढंग से कदम उठाता है, एनईपी 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 वास्तविकता का अनुवाद करता है। सीसीआरटी समकालीन शिक्षण विधियों के साथ सदियों पुराने ज्ञान का सम्मिश्रण करके कला और सांस्कृतिक शिक्षा को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहा है। संस्कृति और कला शिक्षा के लिए यूनेस्को की रूपरेखा ठीक इस पर प्रकाश डालती है- सांस्कृतिक साक्षरता सिर्फ फायदेमंद नहीं है, लेकिन टिकाऊ और एकजुट समाजों के लिए आवश्यक है ।

विश्व स्तर पर, सफल शैक्षिक मॉडल, जैसे कि फिनलैंड, दक्षिण कोरिया और जापान में, सांस्कृतिक शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हैं। फिनलैंड, अक्सर अपनी शिक्षा प्रणाली के लिए प्रशंसा करता है, अपने पाठ्यक्रम के भीतर सांस्कृतिक प्रशंसा को गहराई से एकीकृत करता है। इसी तरह, दक्षिण कोरिया ने एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ अपने शैक्षिक ढांचे को प्रभावित करने के लिए वैश्विक मान्यता अर्जित की है।

भारत, जिसे लंबे समय से विश्वगुरु के रूप में मनाया जाता है, के पास अब एनईपी 2020 जैसी नीतियों द्वारा निर्देशित सांस्कृतिक शिक्षा पहल को लागू करके अपने नेतृत्व को पुनः प्राप्त करने का अवसर है। सीसीआरटी की पहल (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के तहत) - जिसमें डिजिटल जिला रिपॉजिटरी परियोजना और कला-आधारित शिक्षाशास्त्र में विशेष शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यशालाएं शामिल हैं - किशोरों को विशेष रूप से जमीनी स्तर पर प्रभावित किया है।

ये पहल सांस्कृतिक गर्व और आत्म-जागरूकता की वास्तविक भावना को बढ़ावा देती हैं, जिससे युवा लोगों को किशोरावस्था में वास्तविक रूप से चित्रित लोगों के समान पहचान

संघर्ष को नेविगेट करने में मदद मिलती है। हम पर गर्मियों की छुट्टियों के साथ, समय बेहतर नहीं हो सकता है। पीएम मोदी की अपील सीसीआरटी के अवकाश के समय को सीखने के रोमांच में बदलने की दृष्टि से गूंजती है।

कल्पना कीजिए कि हमारे बच्चे पारंपरिक शिल्प में इमर्सिव स्टोरीटेलिंग सेशन, थिएटर वर्कशॉप या हैंड्स-ऑन अनुभवों के लिए स्क्रीन टाइम के सांसारिक दोपहर के भोजन की अदला-बदली करते हैं। निश्चित रूप से, ये अनुभव दूर की समृद्ध छुट्टी का वादा करते हैं

इसके अलावा, सांस्कृतिक और विरासत शिक्षा सहानुभूति का पोषण करती है - हमारी तेजी से वैश्वीकरण की दुनिया में एक अनिवार्य गुणवत्ता। यह भावनात्मक लचीलापन भी प्रदान करता है, आधुनिक दिन की चुनौतियों को संबोधित करने के लिए आत्मविश्वास के साथ किशोरों को लैस करता है। इसलिए, जैसे ही गर्मी के शिविर शुरू होते हैं और हंसमुख आवाजें गतिविधि से भरे सत्रों के माध्यम से गूंज उठती हैं, आइए हम एनईपी 2020 की दृष्टि और सीसीआरटी के मिशन के बीच सही सामंजस्य को पहचानें। साथ में, वे सांस्कृतिक रूप से सचेत हैं, विश्व स्तर पर दिमाग वाले नागरिक भारतीय परंपराओं में गहराई से निहित हैं। वास्तव में, भरत, मूल विश्वगुरु के रूप में, शैक्षिक नवाचार में उदाहरण के लिए नेतृत्व करने के लिए अच्छी तरह से तैनात है। सांस्कृतिक शिक्षा केवल परंपराओं को संरक्षित करने के बारे में नहीं है - यह अगली पीढ़ी को सशक्त बनाने के बारे में है।

आइए इस विचार को तहे दिल से गले लगाएं, इस गर्मी की छुट्टी को भारत के किशोरों के लिए सांस्कृतिक खोज और विकास की अविस्मरणीय यात्रा में बदलें।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

अब गर्मी की मार करने लगी है लाचार

विजय गर्ग

अमरस, शरबत, ठंडाई, आइसक्रीम, कुल्फी, सोडा, शिकंजी के दिन आ गये हैं। हमारी जिंदगी में सावन या वसंत आये न आये पर गर्मी तो सही समय पर आकर खड़ी हो जाती है। खड़ी क्या होती है, यूं समझो कि एक बेवफा प्रेमिका की तरह सताती है। फिर बिजली जाने और पानी की किल्लत का सिलसिला चालू हो जाता है। पानी बचाओ, तरल पदार्थ पियो और पक्षियों के लिये पानी रखो जैसे प्रवचनों की बाढ़-सी आ जाती है।

इधर बड़ी मुश्किल से कंबल-रजाई तह करने से जान छूटती है। पर सर्दियों के कपड़े समेट कर रखना भी अपने आप में पूरा प्रोजेक्ट है। पूरी तो जगह चाहिए और पूरा समय। गर्मी के मौसम की अलग आफत है। अब बोतल और कूलर में पानी भरने में जुटो और एसी की सर्विस करवाओ। इस बार समय से पहले ही खूंखार गर्मी पड़नी प्रारंभ हो गई है। गर्मी अकेली नहीं आती, अपने साथ धूल भरी आंधियां जरूर लाती है। फिर झाड़ उठाये घूमते रहो सारा दिन और घरवालों के ताने सुनो कि घर में सफाई ही नहीं है।

वैसे देखा जाये तो सूरज का जलना भी वाजिब है क्योंकि हर कोई चांद को प्रेम करता है। भला सूरज को यह प्रेम कैसे सुहायेगा? जलन तो होगी ही। एक मनचले का कहना है कि काश! सूरज की भी कोई पत्नी होती तो उसे कंट्रोल में रखती। एक शराबी का सुझाव है कि गर्मियों में दारू दोपहर को पीनी चाहिए, क्योंकि गिर भी गये तो कह सकते हैं गर्मी के कारण चक्कर आ गया होगा। तपती दोपहर में स्कूटर या कार की बलबलाती सीट पर बैठना भी बहादुरी का कारनामा माना जा सकता है। इन दिनों बैंगन बेचने वाले पता नहीं क्या करते होंगे क्योंकि शाम तक तो टोकरे में रखे-रखे बैंगनों का भरता ही बन जाता होगा।

एक नई बात देखने में आई है कि अब लोगों को लू कहने में भी शर्म आने लग गई है। अपनी लू अब हीट वेव बन चुकी है। मौसम विभाग कभी येलो अलर्ट भेजता है कभी ऑरेंज अलर्ट। गर्मी का यही हाल रहा तो शायद वह दिन भी आयेगा जब यह घोषणा होगी कि ढाबे वालों को तन्दूर की जरूरत नहीं रहेगी। अब कार के बोनट पर भी रोटियां सेंकी जा सकती हैं।

हँसी की लाइब्रेरी

हँसी जीवन का प्रभात है। यह शीतकाल की गुनगुनी धूप है तो ग्रीष्म की तपती दुपहरी में सघन छाया। इससे तनमन खिल उठता है। स्वयं को तो आनंदानूभूति होती ही है, आसपास का वातावरण भी महक उठता है। यह हास- परिहास, पीड़ा, दुख-दर्द की शत्रु है। यह निराशा, चिंता और दुख का अचूक इलाज है । असीमित इच्छाओं के युग में आज तनाव, जीवन का एक हिस्सा बन गया है। इस भागमभाग की जिन्दगी में बिना मुस्कुराए ही कई दिन बीत जाते हैं। लोगों को फ्री की हँसी के लिए भी लाफ्टर क्लबों की सदस्यता ग्रहण करनी पड़ रही है। कई शारीरिक व मानसिक रोगों के इलाज के लिए हँसी वैकल्पिक दवा रही है। उच्च रक्तचाप, चिंता, निराशा, नर्वस—ब्रेक—डाउन, हृदय रोग तथा अल्सर जैसे रोग तनाव के कारण होते हैं और हँसी इन्हें दूर करने का आसान तरीका है। अगर हृदय रोग के रोगी को शल्य चिकित्सा के चार या छः सप्ताह के बाद हँसाया जाए तो वह तेजी से ठीक होने लगता। है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए 'विश्व हास्य दिवस' मनाया जाता है।

वैज्ञानिक उन स्थानों को खोजने का प्रयास कर रहे हैं जहां लोग खुलकर हँस सकें। आज इस तीव्र संचार के युग में ऐसे कई नायाब तरीके हैं जिससे हँसी को वायरल किया जा सकता है। लोग अपनी स्वाभाविक हँसी को रिकॉर्ड करके, आडियो / वीडियो बनाकर, चुटकुलों के माध्यम से इकट्ठा कर सकते हैं। स्क्रीन पर ऐसे ओडियो / वीडियो चलाकर कुछ समय के लिए ही सही, बिलकुल तरोताजा हो सकते हैं। अपने भीतर नई ऊर्जा का संचार कर सकते हैं। यह ऊर्जा पूरे तनमन पर सकारात्मक प्रभाव डालेगी और हम पूरी ऊर्जा के

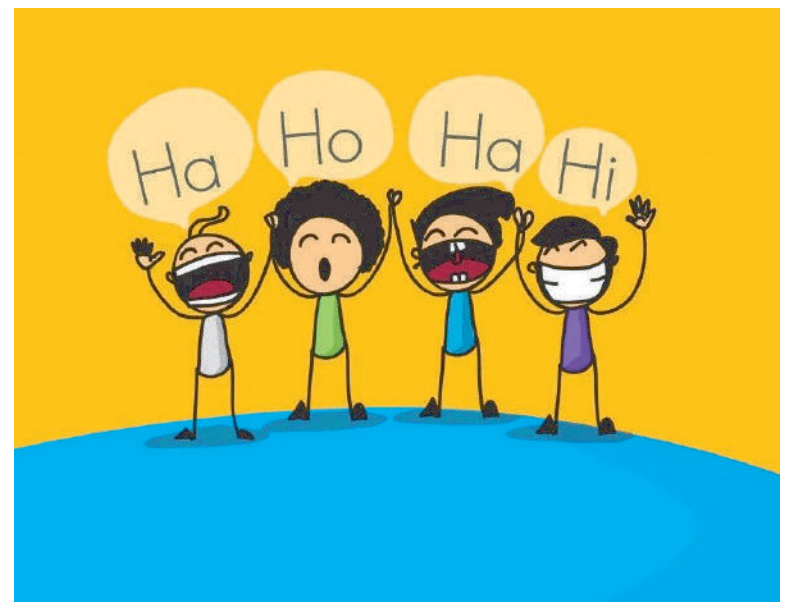

साथ कार्य करने के लिए तैयार हो जाएंगे।

खुलकर हँसने से शरीर के भीतरी अंगों को सकारात्मक संदेश जाता है और ऐसे रसायन कम बनते हैं, जिससे तनाव बढ़ता है। उन्मुक्त हँसी हँसने से मस्तिष्क से लेकर संपूर्ण नाड़ी मंडल कंपायमान हो उठता है तथा फेफड़ों की अशुद्ध वायु शरीर से बाहर निकल जाती है। विभिन्न मांसपेशियां समुचित रुप से सक्रिय हो जाती हैं और गुर्दे के ऊपर स्थित एड्रिनल ग्रंथियों का स्त्राव, रक्त में मिलकर स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। निःसंदेह फ्री में मिलने वाली यह औषधि बहुत-सी बीमारियों एवं जटिलताओं के लिए एक अनमोल रसायन है, इसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम हँसी के लिए एक लाइब्रेरी बनाएं, जहां तरह-तरह की हँसी हो और साथ हो, हँसने वाले मित्र। ये हँसी स्वाभाविक हो, दिखावे के लिए नहीं ।

यह लाइब्रेरी सबसे पहले हमारा घर होना चाहिए। तो आइए खोलते हैं सभी स्थानों पर एक हँसी की लाइब्रेरी, जहां हमें मिलती रहेगी फ्री औषधि। जो खुलकर हँसते रहते हैं, वे सदैव स्वस्थ रहते हैं।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

जैव विविधता बचाने को हो वन्य जीवों का संरक्षण

विजय गर्ग

वन्यजीव संरक्षण सिर्फ मानव जीवन की गुणवत्ता के लिए ही नहीं बल्कि मानव जीवन के अस्तित्व के लिए भी जरूरी है। हर साल 3 मार्च को मनाये जाने वाले विश्व वन्यजीव दिवस की इस बार थीम है, 'वन्यजीव संरक्षण वित्त : लोगों और ग्रह में निवेश'। वास्तव में इसका मतलब वन्यजीवों और उनके प्राकृतिक आवासों के संरक्षण हेतु आर्थिक संसाधनों का प्रबंध करना है ताकि न केवल जैव विविधता की रक्षा हो सके बल्कि इसका लाभ समाज और समूची धरती को भी मिले। इस थीम के बहुत गहरे मायने हैं। अगर वन्यजीवों और उनकी पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के लिए वन्यजीवन पर आर्थिक निवेश नहीं किया गया, तो दुनिया की एक बहुत बड़ी आबादी भी विकास से वंचित हो जायेगी।

वन्यजीव संरक्षण पर किये गये निवेश से जनजातीय समुदाय तो लाभान्वित तो है ही, इको टूरिज्म, वैकल्पिक रोजगार और प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग स्थानीय लोगों के जीवनस्तर को बेहतर बनाता है। हालांकि यह भी जानना जरूरी है कि वन्यजीव संरक्षण दिवस जनजातीय समुदायों के विकास के लिए नहीं मनाया जाता बल्कि इसे मनाये जाने के पीछे लगातार वन्यजीवों का विनाश है। हर साल 3 मार्च को विश्व वन्यजीव दिवस मनाने का मकसद वन्यजीवों और वनस्पतियों के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ाना और लोगों के मन में वन्यजीवन के प्रति सम्मान पैदा करना है।

वैसे हर साल की अलग थीम के अलावा वन्यजीव दिवस मनाये जाने की जो स्थानीय थीम है, उसका मकसद वन्यजीवों और वनस्पतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। जाहिर है ये जागरूकता बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर वित्तीय संसाधनों की भी जरूरत है। इसलिए विश्व वन्यजीव संरक्षण दिवस के दिन तमाम वित्तीय संगठन, विभिन्न सरकारें, नागरिक समाज और कार्पोरेट जगत मिलकर इन संसाधनों के जुटाने पर विचार विमर्श करता है। इस साल विशेष रूप से सही थीम है कि दुनियाभर के वन्यजीव को बचाने के लिए जिस व्यापक पैमाने पर वित्त की जरूरत है, उसकी व्यवस्था कब, कैसे और कहां से हो। जब

वन्यजीव संरक्षण पर निवेश की बात होती है तो स्पष्ट कर दिया जाता है कि इसका मतलब स्थानीय समुदायों को संसाधनों से बेहतर बनाना है। अगर वन्यजीव संरक्षण पर निवेश होता है तो धरती में पारिस्थितिकी के संतुलन की उम्मीद की जा सकती है वर्ना वन्यजीव के निरंतर विनाश से जलवायु परिवर्तन के बेलगाम होने और प्राकृतिक आपदाओं की बाढ़ आना भी तय है। इसलिए वन्यजीवन बचाने के लिए किये गये निवेश को धरती को बचाने के लिए किया गया निवेश कहते हैं।

अगर वन्यजीव संरक्षण के लिए निवेश किया गया तो पारिस्थितिकी संतुलन भी मजबूत होगा, जलवायु परिवर्तन में रोक लगेगी, प्राकृतिक आपदाओं में कमी आयेगी और पारिस्थितिक सेवाएं जैसे स्वच्छ जल, हवा आदि को भी संरक्षण मिलेगा, जो कि न सिर्फ मानव जीवन को स्वस्थ बनाये रखने के लिए बल्कि इसे संरक्षण देने के लिए भी जरूरी है। वन्यजीव पारिस्थितिकी तंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। यह खाद्य श्रृंखला को संतुलित रखते हैं और प्राकृतिक चक्रों जैसे कार्बन और नाइट्रोजन चक्र को सुचारू रूप से चलाने में मददगार होते हैं। इसलिए किसी भी जीव प्रजाति के विलुप्त होने का असर इंसानों के जीवन के लिए बढ़ते खतरे के रूप में होता है। क्योंकि प्रकृति से कोई भी जीव प्रजाति जब लुप्त होती है, तो उस स्तर का असंतुलन पैदा होता है और इससे समूचे पारिस्थितिकी तंत्र पर असर पड़ता है।

वन्यजीव संरक्षण जलवायु परिवर्तन को भी रोकने में सहायक है क्योंकि जंगलों में रहने वाले जीव जंतु और पेड़-पौधे जलवायु परिवर्तन को अपनी तरह से नियंत्रित करते हैं। मसलन हाथी जंगलों में बीजों का फैलाव करते हैं, जिससे वनों का न केवल विकास उनका सघनीकरण होता है। वन कार्बनडाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और कार्बनडाइऑक्साइड के अवशोषित होने से ग्लोबल वार्मिंग का खतरा कम होता है। वन्यजीवों के संरक्षण से जलस्रोतों की रक्षा होती है। इसी तरह वन्यजीव संरक्षण जैव विविधता को बढ़ाता है; क्योंकि वन्यजीव संरक्षण का मतलब जैव विविधता का संरक्षण है। धरती को बचाने में हर जीव की अपनी एक भूमिका होती है। यदि कोई जीव लुप्त होता है तो उसके हिस्से की भूमिका कोई दूसरा नहीं उठाता और इस तरह जैव विविधता का नुकसान होता है। मसलन अगर जंगल में शेर और बाघ जैसे शिकारी जीव कम हो जाएंगे तो हिरण और जंगली सूअर जैसे शाकाहारी जीवों की संख्या बढ़ जायेगी और वो जंगलों का सफाया कर डालेंगे।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

ब्रेन-चिप तकनीक में चीन की नई छलांग

चीन ने तकनीक की दुनिया में एक और बड़ा कीर्तिमान स्थापित किया है। बीजिंग स्थित चाइनीज इंस्टीट्यूट फार ब्रेन रिसर्च और न्यूसाइबर न्यूरोटेक कंपनी ने मिलकर तीन मरीजों के दिमाग में एक विशेष चिप 'बेनाओ नंबर वन' को सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित किया है। यदि यह परियोजना अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करती है, तो साल के अंत तक 13 लोगों में यह चिप लगाई जा सकती है, जिससे चीन इस क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। ब्रेन- कंप्यूटर इंटरफेस (बीसीआइ) तकनीक मानव मस्तिष्क और मशीन के बीच सीधा संपर्क स्थापित करने की क्षमता रखती है। इस प्रोजेक्ट के प्रमुख विज्ञानी लुओ मिनमिन के अनुसार, यदि अगले वर्ष सरकार से स्वीकृति मिलती है, तो 50 और मरीजों पर इसका परीक्षण किया जाएगा। यह प्रयास चीन को न्यूरालिंक जैसी प्रमुख कंपनियों के समकक्ष खड़ा कर सकता है। इस तकनीक का मुख्य उद्देश्य लकवाग्रस्त मरीजों और न्यूरोलाजिकल डिसआर्डर से पीड़ित लोगों की मदद करना है। इस तकनीक से मरीज अपने विचारों से कंप्यूटर, रोबोटिक उपकरण व अन्य डिजिटल इंटरफेस को नियंत्रित कर सकते हैं।

ब्रेन-चिप के क्षेत्र में अमेरिका की कंपनियां अब तक सबसे आगे रही हैं। उदाहरण के लिए, सिन्क्रन कंपनी, जिसमें जेफ बेजोस और बिल गेट्स ने निवेश किया है, पहले ही 10 मरीजों में अपनी चिप प्रत्यारोपित कर चुकी है। वहीं, एलन मस्क की न्यूरालिंक ने भी तीन मरीजों के साथ परीक्षण शुरू किया है। न्यूरालिंक की चिप गहराई तक दिमाग में जाती है, जिससे सिग्नल की गुणवत्ता बेहतर होती है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है। दूसरी ओर, 'बेनाओ नंबर वन' सेमी- इनवेसिव तकनीक पर आधारित है, जो

दिमाग की सतह पर रखी जाती है। यह कम जोखिमपूर्ण है, पर इसकी सिग्नल गुणवत्ता थोड़ी कमजोर हो सकती है।

चीन की योजना है कि डेढ़ साल में 'बेनाओ नंबर टू' नामक एक और उन्नत चिप विकसित की जाए, जो वायरलेस होगी और अधिक सटीक सिग्नल प्रोसेसिंग में सक्षम होगी। यह चिप न्यूरालिंक के माडल की तरह अधिक जटिल न्यूरल नेटवर्क को समझने और प्रोसेस करने की क्षमता रखेगी। यह तकनीक उन लाखों लोगों के लिए एक नई आशा बन सकती है जो न्यूरोलाजिकल विकारों से जूझ रहे हैं। यह तकनीक केवल चिकित्सा क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि इसे गेमिंग, वर्चुअल रियलिटी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जुड़े अन्य क्षेत्रों में भी अपनाया जा सकता है। बहरहाल, यह परियोजना दर्शाती है कि चीन केवल नई तकनीकों को अपनाने वाला नहीं, बल्कि अब इस क्षेत्र में नेतृत्व करने की दिशा में अग्रसर है। यदि यह प्रयास सफल होता है, तो यह न केवल चीन की तकनीकी शक्ति को सिद्ध करेगा, बल्कि लाखों लोगों के जीवन को भी बदलने में सहायक होगा।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

शक्ति, भक्ति और सेवा का प्रतीक: हनुमान जन्मोत्सव

इस पर्व का असली रंग है उनकी राम-भक्ति का वह अनुपम आलोक। वह भक्ति, जिसने समुद्र की विशालता को एक छलाँग में लाँघ दिया; वह पराक्रम, जिसने संजीवनी पर्वत को हवा में उड़ा दिया; और वह निष्ठा, जिसने रावण के अभिमान को चूर-चूर कर दिया। हनुमान जी ने अपने जीवन को श्रीराम की सेवा में इस कदर समर्पित किया कि उनका नाम राम के बिना अधूरा-सा प्रतीत होता है। लंका को भस्म करने से लेकर लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा तक, हर कदम पर उन्होंने यह साबित किया कि शक्ति और भक्ति का मिलन ही सच्चा बल है। उनकी विनम्रता ऐसी थी कि अनंत सामर्थ्य के बावजूद वे कभी आत्ममुग्ध नहीं हुए। यह निस्वार्थ भाव आज के दौर में एक दुर्लभ दीपक की तरह जलता है, जो हमें बताता है कि सच्ची महानता का रास्ता सेवा से होकर जाता है।

जब चैत्र की पूर्णिमा अपनी चाँदनी भरी किरणों से आकाश को स्वर्णिम आभा में नहलाती है, तो धरती पर एक अलौकिक नाद गूँज उठता है – यह वह पवित्र क्षण है जब पवनपुत्र हनुमान का अवतरण हुआ। एक ऐसी शक्ति का उदय, जो सूर्य को भी अपनी मुट्ठी में समेट सकती थी; एक ऐसी भक्ति का प्राकट्य, जो श्रीराम के प्रति अटूट समर्पण का जीवंत प्रतीक बनी; और एक ऐसा साहस, जिसने रावण की लंका को धूल में मिला दिया। हनुमान जन्मोत्सव कोई साधारण पर्व नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रेरणा का उत्सव है, जो हर हृदय में आत्मविश्वास की ज्योति प्रज्वलित करती है और हर आत्मा को यह एहसास दिलाती है कि सच्चा बल वही है, जो दूसरों की सेवा में झुक जाए। यह वह पावन अवसर है, जब हम हनुमान जी के उस अनुपम जीवन को प्रणाम करते हैं, जो हमें सिखाता है कि शक्ति का सही मूल्य तभी है, जब वह भक्ति और निःस्वार्थ सेवा की सुगंध से सुवासित हो।

हनुमान जी का जन्म एक दैवीय चमत्कार की कथा है। शिव के ग्यारहवें रुद्र के रूप में अवतरित, माता अंजनी और केसरी के पुत्र बनकर वे इस धरा पर आए। पवनदेव ने उन्हें अपनी असीम शक्ति का वरदान दिया, और वे 'पवनपुत्र' कहलाए। त्रेतायुग में उनके आगमन ने एक नई आशा का संचार किया – एक ऐसी शक्ति का जन्म, जो असंभव को संभव करने का दम रखती थी। बाल्यकाल में ही सूरज को फल समझकर निगल लेने की उनकी शरारत ने उनकी अनंत सामर्थ्य का परिचय दे दिया। यह शक्ति इतनी प्रबल थी कि उसे संयम में बाँधने के लिए श्राप देना पड़ा, जो बाद में राम के कृपास्पर्श से मुक्त हुआ। हनुमान का जन्म महज एक घटना नहीं, बल्कि उस शक्ति का प्रादुर्भाव था, जिसने रामायण को अमरता की ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

इस पर्व का असली रंग है उनकी राम-भक्ति का वह अनुपम आलोक। वह भक्ति, जिसने समुद्र की विशालता को एक छलाँग में लाँघ दिया; वह पराक्रम, जिसने संजीवनी पर्वत को हवा में उड़ा दिया; और वह निष्ठा, जिसने रावण के अभिमान को चूर-चूर कर दिया। हनुमान जी ने अपने जीवन को श्रीराम की सेवा में इस कदर समर्पित किया कि उनका नाम राम के बिना अधूरा-सा प्रतीत होता है। लंका को भस्म करने से लेकर लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा तक, हर कदम पर उन्होंने यह साबित किया कि शक्ति और भक्ति का मिलन ही सच्चा बल है। उनकी विनम्रता ऐसी थी कि अनंत सामर्थ्य के बावजूद वे कभी आत्ममुग्ध नहीं हुए। यह निस्वार्थ भाव आज के दौर में एक दुर्लभ दीपक की तरह जलता है, जो हमें बताता है कि सच्ची महानता का रास्ता सेवा से होकर जाता है।

हनुमान जन्मोत्सव का पावन दिन एक अलौकिक उल्लास और भक्ति की सरिता में डूब जाता है। मंदिरों में घंटियों की गूँजती टंकार, हनुमान चालीसा की मधुर स्वरलहरियाँ और सुंदरकांड की पंक्तियों का पवित्र आलाप हवा में भक्ति का ऐसा जादू बिखेरता है कि हर हृदय उसमें डूब जाता है। भक्त श्रद्धा से व्रत रखते हैं, जुलूसों में उत्साह के साथ कदमताल करते हैं और भंडारों के माध्यम से सेवा का अमर संदेश प्रसारित करते हैं। यह दिन केवल उत्सव का प्रतीक नहीं, बल्कि हनुमान जी के संकटमोचन स्वरूप की स्मृति को जीवंत करने का अवसर है। मान्यता है कि इस दिन उनकी सच्ची आराधना हर विपदा को चूर-चूर कर देती है। यह पर्व एक आध्यात्मिक जागृति का संदेशवाहक है, जो हमें उनकी शरण में असीम शक्ति और अखंड शांति का अनुभव कराता है।

आज के इस युग में, जब चारों ओर अनिश्चितता का कोहरा और भटकाव का घना अंधेरा मंडरा रहा है, हनुमान जन्मोत्सव एक प्रेरणा के सूर्य की तरह उदित होता है, जो जीवन को प्रकाशित कर देता है। उनका जीवन हमें यह गहन संदेश देता है कि आत्मबल और अटूट विश्वास के समक्ष कोई भी बाधा टिक नहीं सकती। उनकी असीम शक्ति हमें प्रेरित करती है कि उसे सत्य और न्याय की रक्षा के लिए संधान करें, और उनकी अनन्य भक्ति यह सिखाती है कि जीवन का सच्चा मूल्य दूसरों के लिए समर्पित होने में निहित है। आज का युवा हनुमान जी के जीवन से संयम, साहस और समर्पण का अमूल्य पाठ ग्रहण कर सकता है। यह उत्सव हमें उस भीतरी शक्ति को जागृत करने का सशक्त आह्वान करता है, जो प्रत्येक मानव के हृदय में सुप्त पड़ी है और उसे धर्म व निःस्वार्थ सेवा के पथ पर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

हनुमान जन्मोत्सव एक ऐसा महामिलन है – शक्ति का उत्साह, भक्ति का संगीत और साहस का अनमोल उपहार। यह हमें हनुमान जी के जीवन की वह अनमोल सीख देता है, जहाँ शक्ति विनम्रता से मिलती है और भक्ति सेवा में ढलती है। अगर हम उनके आदर्शों को अपनाएँ, तो न सिर्फ अपने जीवन को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकते हैं, बल्कि समाज को भी एक नई रोशनी दे सकते हैं। हनुमान जन्मोत्सव का यह संदेश हमेशा गूँजता रहेगा – शक्ति भक्ति में है, और भक्ति सेवा में। जय हनुमान, जय श्री राम।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

पैरों और पिंडलियों में दर्द पैरों में दर्द के कई कारण...

विशेष रूप से पिंडलियों में, कई कारणों से हो सकता है। यह दर्द थकान, चलने-फिरने, या काम करने से हो सकता है, लेकिन यह कुछ अन्य बीमारियों की ओर भी इशारा कर सकता है। कुछ संभावित कारण हो सकते हैं।मांसपेशियों में तनाव,,,,अधिक काम करने या व्यायाम करने से मांसपेशियों में तनाव हो सकता है, जिससे दर्द होता है।

पैरों की नसों में समस्या,,,, नसों में समस्या, जैसे कि नसों की सूजन या नसों का दबाव, पैरों में दर्द का कारण बन सकती है।

गठिया एक ऐसी बीमारी है जिसमें जोड़ों में दर्द और सूजन होती है। यह पैरों में भी हो सकता है।

नसों का रोग,,,नसों का रोग, जैसे कि वैरिकोज वेंस, पैरों में दर्द और सूजन का कारण बन सकता है।

मधुमेह के कारण नसों में समस्या हो सकती है, जिससे पैरों में दर्द होता है।

विटामिन बी12 या अन्य विटामिनों की कमी से नसों में समस्या हो सकती है, जिससे पैरों में दर्द होता है।

दर्द होने से हल्की हल्की घबराहट होना एक सामान्य प्रतिक्रिया है, लेकिन यदि दर्द गंभीर है या लंबे समय तक रहता है, तो डॉक्टर से परामर्श करना आवश्यक है। डॉक्टर आपको उचित निदान और उपचार के लिए मदद कर सकते हैं।

अगर आपको पैरों में दर्द की समस्या बनी रहती है, तो यहाँ कुछ सामान्य सुझाव दिए गए हैं जो आपको आराम दिलाने में मदद कर सकते हैं:

आराम करें,,,, अगर आपको पैरों में दर्द है, तो आराम करना महत्वपूर्ण है। अपने पैरों को ऊपर उठाकर बैठने या लेटने से दर्द कम हो सकता है।

व्यायाम करें,,,नियमित व्यायाम करने से मांसपेशियों को मजबूत बनाने में मदद मिल सकती है, जिससे दर्द कम हो सकता है।

जूते या फूट वियर बदलें,,अगर आपको लगता है कि आपके जूते दर्द का कारण बन रहे हैं, तो उन्हें बदलने पर विचार करें।

इसके अलावा, कुछ घरेलू उपचार भी हैं जो आपको आराम दिलाने में मदद कर सकते हैं:

नमक का पानी,,नमक के पानी में पैरों को भिगोने से दर्द कम हो सकता है।

लहसुन का तेल दर्द को कम करने में मदद कर सकता है।अदरक का रस दर्द को कम करने में मदद कर सकता है।

याद रखें कि अगर दर्द गंभीर है या लंबे समय तक रहता है, तो डॉक्टर से परामर्श करना आवश्यक है।

कुछ और सुझाव दिए गए हैं जो आपको आराम दिलाने में मदद कर सकते हैं।

पैरों की मालिश करें,,, पैरों की मालिश करने से मांसपेशियों को आराम मिल सकता है और दर्द कम हो सकता है।

पैरों को ऊपर उठाएं,,,पैरों को ऊपर उठाने से रक्त संचार में सुधार हो सकता है और दर्द कम हो सकता है।

गर्म पानी का स्नान ललें ,,,गर्म पानी का स्नान लेने से मांसपेशियों को आराम मिल सकता है और दर्द कम हो सकता है।

पैरों को आराम दें,,पैरों को आराम देने से मांसपेशियों को आराम मिल सकता है और दर्द कम हो सकता है।

स्वस्थ आहार लें,,स्वस्थ आहार लेने से शरीर को आवश्यक पोषक तत्व मिल सकते हैं और दर्द कम हो सकता है।

इसके अलावा, कुछ योगासन भी हैं जो आपको आराम दिलाने में मदद कर सकते हैं।

वज्रासन करने से पैरों. की मांसपेशियों को आराम मिल सकता है और दर्द कम हो सकता है।पद्मासन करने से पैरों की मांसपेशियों को आराम मिल सकता है और दर्द कम हो सकता है।

याद रखें कि अगर दर्द गंभीर है या लंबे समय तक रहता है, तो डॉक्टर से परामर्श करना आवश्यक है।

डॉ. मुश्ताक अहमद ₹नेचुरोपैथिस्ट₹ हरदा मध्य प्रदेश

तेरी क्या है जात।

बाबा बोले मूत्र पिएँ, पीते श्रद्धावान।
मगर दलित का जल बने, छूते ही अपमान॥

नेत्र मूँद कर मानते, बाबा को भगवान।
तर्क बिना की आस्था, ले लेती है जान॥

ठहर जन्म से जो गया, नीचे उसका मान।
कर्म न देखा जात बस, कैसी यह पहचान॥

पढ़े-लिखे भी पूछते, तेरी क्या है जात।
ज्ञान बिना जब सोच हो, व्यर्थ लगे सब बात॥

छपते चमत्कार बहुत, बन जाते सौगात।
दलित मरे तो छप सके, दो लाइन की बात॥

वोट हेतु बस जातियाँ, गढ़ते सभी विधान।
सत्ता की यह राक्षसी, निगल रही इंसान॥

धर्म वही जो प्रेम दे, करुणा जिसका मूल।
जो बांटे पाखंड है, मानवता पर धूल॥

एक ओर चाँद चूमता, विज्ञान करे बात।
दूजी ओर दलित मरे, मंदिर से हो घात॥

विवेकशील शिक्षा बने, तर्कशील अरमान।
निकाले अंधकूप से, नवचेतन का गान॥

धर्म वही जो जोड़ दे, तोड़े ना इंसान।
जात-पात से मुक्त हो, हो सबका सम्मान॥

जाति-पांति को छोड़कर, बढ़े मनुज का मान।
आधार कर्म हो जहाँ, सौरभ सच्चा ज्ञान॥

-डॉ सत्यवान सौरभ

जन सूचना अधिकार अधिनियम 2005 पर सबसे बड़ा खतरा डिजिटल पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल 2023

परिवहन विशेष न्यूज

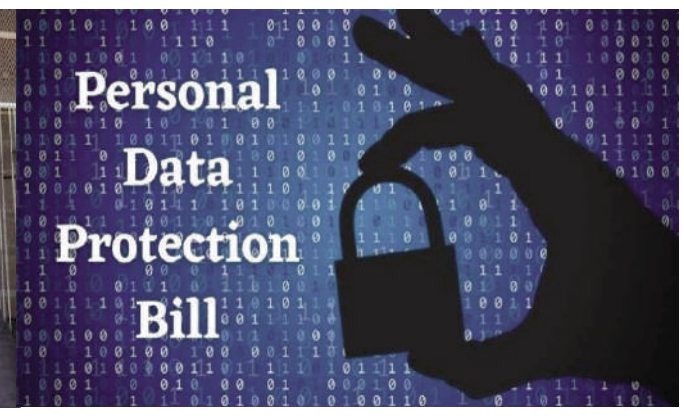

हिसार- केंद्रीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं दूरसंचार मंत्री अश्विनी वैष्णव ने 3 अगस्त 2023 को डिजिटल पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल 2023 लोकसभा में प्रस्तावित किया था। उसके बाद 7 अगस्त 2023 को लोकसभा एवं 9 अगस्त 2023 को राज्यसभा में पारित कर दिया गया. महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने इस बिल को 12 अगस्त 2023 को मंजूरी दे दी और अभी है कानून बन चुका है लेकिन इस कानून के नियमों को बनाने की प्रक्रिया अभी भी जारी है।

डिजिटल पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल 2023 के कानून की धारा 44(3) संशोधन पब्लिक से जुड़े मुद्दों पर भी जानकारी हासिल करने और उन्हें पब्लिश करने पर रोक लगाती है।

डिजिटल डाटा प्रोटेक्शन बिल 2023 का यह संशोधन व्यक्तिगत सूचना के खुलासे पर भी पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाता है. यह संशोधन आरटीआई एक्टिविस्ट्स, खोजी पत्रकारों को भी सार्वजनिक हितों से जुड़ी हुई जानकारी तक पहुंचाने और उन्हें इकट्ठा करने से रोक लगाता है।

केंद्र की सरकार द्वारा कहीं भी किसी से भी सवाल पूछने वाले पत्रकारों, खोजी पत्रकारों एवं आरटीआई एक्टिविस्ट्स के मुंह बंद करने के उद्देश्य से डिजिटल पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल 2023 लेकर आई है। इस बिल के जरिए सरकार सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 का कानून और निजता के अधिकार को कुचलने का प्रयास कर रही है। इससे लोकतांत्रिक जवाबदेही कमजोर हो सकती हैं। यह बिल महत्वपूर्ण सार्वजनिक सूचना की पुस्तक भी प्रतिबंध लगाता है। इससे सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 भी कमजोर होता है। डिजिटल पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल 2023 की धारा 44(3) ने विवाद को जन्म दे दिया है।

पहले आरटीआई अधिनियम की धारा 8(1)(जे) मैं प्रकटीकरण से से छूट केवल तभी दी जाती थी जब व्यक्तिगत जानकारी सार्वजनिक से संबंधित न हो या अनावश्यक गोपनीयता का उल्लंघन करती हो जब तक की व्यापक सार्वजनिक हित ना हो।

संशोधित आरटीआई अधिनियम की धारा 8(1)(जे) जो कि डिजिटल पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल 2023 के तहत यह व्यापक सार्वजनिक हित खंड को हटा देता है और मोटे तौर पर सभी व्यक्तिगत जानकारी को आरटीआई के तहत प्रकटीकरण से छूट देता है।

डिजिटल प्रोटेक्शन डाटा बिल 2023 की धारा 44(3) पार्टी यदि नियम 2005 की धारा 8(1)(जे) में संशोधन करती है जिससे व्यक्तिगत डाटा की सुरक्षा के बहाने सूचना देने से इनकार करने का दायरा बढ़ गया है।

डिजिटल पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल 2013 आरटीआई कानून को कमजोर करेगा, और डाटा संरक्षण बोर्ड के जरिए केंद्र सरकार के पास सारी ताकत होगी।

निजता के अधिकार वाले सुप्रीम कोर्ट के 2017 के फैसले में वैसे भी आरटीआई की धारा 8(1)(जे) निरर्थक हो गई थी।

डाटा संरक्षण बिल, 2018 में आरटीआई अधिनियम 2005 संबंधी प्रस्तावित संशोधनों को लेकर कुछ चिंताएं व्यक्त की और संशोधन द्वारा आरटीआई अधिनियम के प्रावधानों को कमजोर बनाया जा रहा है, जिसके बाद सरकार से जानकारी हासिल करना और कठिन हो जाएगा।

जुर्माने का प्रावधान

डिजिटल पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन बिल 2013 के तहत केंद्र सरकार कहीं भी किसी से भी सवाल जवाब करने वाले खोजी पत्रकारों का मुंह बंद करने के लिए यह बिल लाई है। अगर खोजी पत्रकार सरकार के भ्रष्टाचार की नीतियों को उजागर करते हैं तथा भ्रष्टाचार से संबंधित कोई भी जानकारी कहीं से भी हासिल करते हैं तो ऐसी स्थिति में 500 करोड़ रुपये तक का जुर्माना लग सकता है।

डाटा ब्रीच को रोकने के लिए सुरक्षात्मक उपाय नए करने पर 250 करोड़ रुपए का जुर्माना लगाया जा सकता है तथा बच्चों से संबंधित डाटा को पूरा न करने पर 200 करोड़ रुपए का जुर्माना लगाया जा सकता है।

जाति की जंजीरें: आज़ादी के बाद भी मानसिक गुलामी

कैसे लोग अंधभक्ति में बाबा की पेशाब को ₹प्रसाद₹ मानकर पी सकते हैं, लेकिन जाति के नाम पर दलित व्यक्ति के छूने मात्र से पानी अपवित्र मान लिया जाता है। इन समस्याओं की जड़ें धर्म, राजनीति, शिक्षा और मीडिया की भूमिका में छिपी हैं। शिक्षा में विवेक की कमी, मीडिया की चुप्पी, धर्मगुरुओं की मनमानी और जातिवादी मानसिकता समाज को पिछड़ेपन की ओर ढकेल रही है। यह सवाल उठाता है कि यदि आस्था किसी बाबा की पेशाब को 'पवित्र' मान सकती है, तो एक दलित का पानी 'अपवित्र' कैसे हो सकता है?

प्रियंका सौरभ

भारत, जिसे आध्यात्मिकता और विविधता का देश कहा जाता है, अपने भीतर विरोधाभासों का एक ऐसा संसार छुपाए बैठा है जो कभी-कभी चौंका देता है। एक ओर हम विज्ञान, तकनीक, अंतरिक्ष और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बात करते हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक और सांस्कृतिक परतों में आज भी मध्ययुगीन सोच जड़ें जमाए बैठी है। एक ही समाज में ऐसे दृश्य देखने को मिलते हैं जहां लोग किसी बाबा के चरणामृत को 'अमृत' मानकर पी जाते हैं, यहां तक कि गोमूत्र और गोबर को औषधि बताकर उसका सेवन करते हैं; और उसी समाज में एक दलित व्यक्ति के हाथ का पानी पीना 'पाप' मान लिया जाता है। यही वह विडंबना है जिसे इस तीखे वाक्य ने पूरी ताकत से उजागर किया है—₹आस्था पेशाब तक पिला देती है, जाति पानी तक नहीं पीने देती।₹ यह पंक्ति महज़ एक व्यंग्य नहीं, बल्कि भारतीय समाज की गहराई से जमी हुई दो बड़ी बीमारियों की पहचान है—एक है अंधविश्वास में डूबी आस्था और दूसरी है जातिगत भेदभाव। दोनों ही एक हद तक इंसानियत, तर्कशक्ति और समानता के मूल सिद्धांतों को चुनौती देते हैं।

आस्थाः श्रद्धा और मूर्खता के बीच की पतली रेखा

आस्था किसी भी समाज की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रीढ़ होती है। यह इंसान को एक उद्देश्य देती है, उसे नैतिकता और आत्मबल प्रदान करती है। लेकिन जब यही आस्था तर्क, विज्ञान और मानवाधिकारों की सीमा लांघकर अंधश्रद्धा में बदल जाती है, तब वह खतरनाक रूप ले लेती है। भारत में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहां धर्मगुरुओं ने अपने अनुयायियों को गोमूत्र पीने, मल-मूत्र का सेवन करने, या स्वयं को 'भगवान' घोषित कर देने जैसे कृत्य करवाए और लोग आंख मूंदकर उनका पालन करते रहे। एक बाबा द्वारा 'चमत्कारी जल' के नाम पर अपनी पेशाब पिलाने की खबरें भी समय-समय पर सामने आती रही हैं। श्रद्धालु इसे 'आशीर्वाद' मानकर पीते हैं, और मीडिया जब इन घटनाओं पर सवाल उठाती है, तो आरोप लगाया जाता है कि वह धर्म का अपमान कर रही है। यह कैसी आस्था है जो इंसान को अपनी सोच और विवेक को पूरी तरह त्यागने को विवश कर देती है? यह कैसी श्रद्धा है जो सवाल उठाने वालों को अपराधी बना देती है?

जातिः एक आधुनिक समाज में मध्यकालीन सोच

अब बात करें उस दूसरी बड़ी सामाजिक बीमारी की—जातिवाद की। भारत में जाति एक ऐसी संरचना है जो जन्म के आधार पर व्यक्ति की

सामाजिक हैसियत, पेशा, अधिकार और यहां तक कि जीवन-मरण के अवसर भी तय करती है। भारतीय संविधान ने भले ही जातिवाद को गैरकानूनी घोषित कर दिया हो, लेकिन सामाजिक मानसिकता में इसकी जड़ें आज भी उतनी ही गहरी हैं। आज भी देश के कई हिस्सों में दलितों को मंदिरों में प्रवेश नहीं मिलता, उनके लिए अलग कुएं या नल होते हैं, स्कूलों में उनके बच्चों को अलग बैठाया जाता है, और उनके स्पर्श मात्र से वस्तुएं 'अपवित्र' मानी जाती हैं। हाथ से मैला उठाने जैसी अमानवीय प्रथा आज भी समाप्त नहीं हुई है। ऐसे उदाहरण रोज़ सामने आते हैं जब दलित युवक को ऊंची जाति की लड़की से प्रेम करने के लिए मार दिया जाता है, या जब किसी गांव में सिर्फ इस वजह से उनके घरों में आग लगा दी जाती है कि उन्होंने 'मर्यादा' लांघी। यह कितना त्रासद है कि वही समाज जो गोमूत्र को औषधि मान सकता है, वह एक इंसान के छूने मात्र से पानी को अपवित्र मानता है।

विरोधाभास की जड़ें

इस विरोधाभास की जड़ें कहीं और नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संरचना में छिपी हुई हैं। धर्म के नाम पर आस्था को हथियार बनाकर लोगों की सोच को नियंत्रित किया गया। धर्मग्रंथों की मनमानी व्याख्याओं के ज़रिए एक वर्ग को 'ऊंचा' और दूसरे को 'नीचा' साबित किया गया। जो सवाल उठाए, वह 'धर्म विरोधी' करार दे दिया गया।

राजनीति ने भी इस व्यवस्था को खूब पोषित किया। जातियों को वोट बैंक में बदल दिया गया। आरक्षण के नाम पर नफरत फैलाई गई, लेकिन जातिगत अत्याचार को खत्म करने के लिए न ठोस प्रयास किए गए, न इच्छाशक्ति दिखाई गई। आस्था के नाम पर जनता को भावनात्मक रूप से बांधा गया, और वैज्ञानिक सोच को 'पश्चिमी विचारधारा' बताकर नकार दिया गया।

शिक्षा और विवेक की कमी

शिक्षा वह उपकरण है जो समाज को तर्कशील और न्यायप्रिय बनाता है। लेकिन भारत की शिक्षा व्यवस्था में तर्क और मानवाधिकार की शिक्षा बहुत सीमित है। हम बच्चों को विज्ञान पढ़ाते हैं, लेकिन उनकी सोच में वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं भरते। हम उन्हें नैतिक शिक्षा देते हैं, लेकिन जातिवाद और सामाजिक न्याय के सवालों पर चुप रहते हैं। जब बच्चा स्कूल में यह देखता है कि उसके सहपाठी को 'चमार' या 'भंगी' कहा जा रहा है, जब शिक्षक ही छात्रों से जाति पूछते हैं, तो यह सोच उसकी चेतना में गहराई तक बैठ जाती है। यही बच्चा बड़ा होकर वही भेदभाव करता है, और एक बार फिर वह दुष्चक्र शुरू हो जाता है।

मीडिया और समाज का दोगलापन

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, लेकिन जब बात जातिवाद या अंधविश्वास की आती है, तो उसका रुख या तो बेहद सतही होता है या पूरी तरह से चुप्पी ओढ़ लेता है। बाबाओं के चमत्कारों को वह 'मनोरंजन' के नाम पर दिखाता है, लेकिन किसी दलित की हत्या पर सिर्फ दो मिनट की रिपोर्ट चलाकर बात खत्म कर देता है। वह जानबूझकर ऐसे मुद्दों से बचता है जो उसे किसी 'विशेष वर्ग' से नाराज़ कर सकते हैं।

वहीं समाज भी अपनी सुविधानुसार संवेदनशीलता चुनता है। गोमूत्र बेचने वाले को 'आधुनिक ऋषि' कहा जाता है, लेकिन मैनहोल की सफाई करते मजदूर की मौत पर कोई आवाज़ नहीं उठती।

क्या है समाधान?

तर्कशील शिक्षा का विस्तारः स्कूलों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक न्याय पर आधारित पाठ्यक्रम को शामिल किया जाना चाहिए। बच्चों को बचपन से यह सिखाना ज़रूरी है कि आस्था का मतलब अंधश्रद्धा नहीं होता, और हर इंसान समान है। सख्त कानून और उनका क्रियान्वयनः जाति आधारित भेदभाव के खिलाफ बने कानूनों को सिर्फ कागज़ पर नहीं, ज़मीन पर भी लागू करना होगा। दोषियों को सज़ा मिले, तभी समाज में बदलाव संभव है। मीडिया की ज़िम्मेदारीः मीडिया को इस विषय पर ईमानदार विमर्श शुरू करना चाहिए। दलितों के मुद्दों, जातिगत अन्याय और अंधविश्वास के खिलाफ सशक्त रिपोर्टिंग ज़रूरी है। धार्मिक संस्थाओं में सुधारः धर्मगुरुओं को अपने अनुयायियों को विज्ञान और सामाजिक समानता का संदेश देना चाहिए। अगर धर्म में परिवर्तन नहीं होगा, तो समाज में भी नहीं होगा। सिविल सोसायटी और युवाओं की भागीदारीः सामाजिक संगठनों, छात्रों और जागरूक नागरिकों को इस व्यवस्था के खिलाफ मिलकर आवाज़ उठानी होगी। सोशल मीडिया को एक सशक्त माध्यम बनाकर जातिवाद और अंधविश्वास के खिलाफ आंदोलन खड़ा किया जा सकता है।

क्या हम सच में आधुनिक हो पाए हैं?

भारत जब चंद्रमा पर पहुंचने की उपलब्धि का जश्न मना रहा होता है, तभी किसी गांव में एक दलित को मंदिर में प्रवेश करने पर पीट-पीट कर मार दिया जाता है। जब एक ओर सरकारी अभियान 'स्वच्छ भारत' का नारा देते हैं, वहीं दूसरी ओर हजारों सफाईकर्मी बिना सुरक्षा के गटर में उतरकर दम तोड़ते हैं। और जब एक ओर लोग बाबा की पेशाब को 'प्रसाद' मानकर पीते हैं, उसी समय एक दलित का छुआ पानी 'गंदा' मान लिया जाता है। यह विरोधाभास हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या विकास सिर्फ इमारतें, मेट्रो और मोबाइल नेटवर्क तक सीमित है, या इसमें सोच, समानता और इंसानियत भी शामिल है? आस्था का स्थान महत्वपूर्ण है, लेकिन अगर वह इंसानियत को कुचलती है, तो वह किसी काम की नहीं। जाति की संरचना अगर किसी को उसका मानवाधिकार नहीं देती, तो वह टूटनी ही चाहिए। इसलिए आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है कि हम इस पाखंड को पहचानें और उसके खिलाफ बोलें। आस्था अगर पेशाब तक पिला सकती है, तो समाज को इतना संवेदनशील और तर्कशील बनाना होगा कि जाति के नाम पर पानी से इनकार न किया जाए। इंसान की पहचान उसकी जाति से नहीं, उसके कर्म और चरित्र से हो—यही असली धर्म है, यही सच्ची आस्था।

“गाँव से ग्लोबल तक: डॉ. सत्यवान सौरभ की कलम की उड़ान”

(संघर्ष, साहित्य और संवेदना, हरियाणा की माटी से निकला साहित्य का सितारा, शब्दों से समाज तक,युवा साहित्य का उगता सूरज)

भारत की मिट्टी ने सदैव ऐसे रचनाकारों को जन्म दिया है जिन्होंने समाज, संस्कृति और विचारों को नई दिशा दी है। इन्हीं में एक विशिष्ट नाम है डॉ. सत्यवान सौरभ, जो अपनी लेखनी के माध्यम से हिंदी साहित्य और सामाजिक चिंतन को समृद्ध करने वाले एक प्रतिभाशाली, परिश्रमी और संवेदनशील साहित्यकार हैं। हरियाणा जैसे ग्रामीण पृष्ठभूमि से निकलकर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाना आसान नहीं होता, लेकिन डॉ. सौरभ ने इसे अपने अदम्य आत्मबल, लगन और साहित्यिक समर्पण से संभव कर दिखाया है।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

डॉ. सत्यवान सौरभ का जन्म 3 मार्च 1989 को हरियाणा राज्य के भिवानी जिले के बड़वा गाँव में हुआ। एक सामान्य ग्रामीण परिवार में जन्म लेने वाले सत्यवान सौरभ का बचपन संघर्षों से भरा रहा, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। बचपन से ही लेखन की ओर उनका झुकाव रहा। उन्होंने बहुत कम उम्र में अपनी साहित्यिक प्रतिभा का प्रदर्शन करना शुरू कर दिया। मात्र 16 वर्ष की आयु में जब वे कक्षा 11वीं में पढ़ रहे थे, तब उन्होंने अपना पहला काव्य संग्रह 'यादें' लिखा। यह संग्रह न केवल उनकी लेखनी की परिपक्वता को दर्शाता है, बल्कि यह भी प्रमाणित करता है कि वे प्रारंभ से ही विचारशील और रचनात्मक रहे हैं। अपनी पढ़ाई के दौरान उन्होंने कड़ी मेहनत करते हुए सरकारी सेवा में स्थान प्राप्त किया और नौकरी के साथ-साथ अपनी शिक्षा को भी जारी रखा। उन्होंने राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की और बाद में पीएच.डी. के लिए पंजीकरण करवाया। यह सब उन्होंने पूर्णकालिक कार्य करते हुए और पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए किया, जो किसी भी साधारण व्यक्ति के लिए असाधारण बात है।

साहित्यिक रचनाएँ और शैली

डॉ. सत्यवान सौरभ की साहित्यिक रचनाएँ अत्यंत विविध और गहन हैं। उनकी रचनाएँ सामाजिक सरोकार, मानवीय संवेदनाएं, प्रकृति, बाल साहित्य, समकालीन राजनीति और संस्कृति जैसे विषयों को समेटे हुए हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं:

'तितली है खामोश' (दोहा संग्रह)
'कुदरत की पीर' (निबंध संग्रह)
'यादें' (ग़ज़ल संग्रह)
'परियों से संवाद' (बाल काव्य संग्रह)
'इश्यूज एंड पैन्स' (अंग्रेज़ी निबंध संग्रह)

इन रचनाओं में भाषा की सहजता और भावों की गहराई देखते ही बनती है। दोहों के माध्यम से उन्होंने पारंपरिक हिंदी कविता की विरासत को न केवल आगे बढ़ाया बल्कि उसमें समकालीनता का रंग भी भरा।

संपादकीय लेखन और विचारधारा

सिर्फ रचनात्मक साहित्य ही नहीं, डॉ. सत्यवान सौरभ संपादकीय लेखन में भी उतने ही सक्रिय और प्रभावशाली हैं। उन्होंने समाज और राजनीति से जुड़े ज्वलंत मुद्दों पर बेबाक लेख लिखे हैं। उनके लेखों में स्पष्टता, संतुलन और विचारों की गहराई स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उनकी कलम सिर्फ कल्पनाओं में नहीं भटकती, बल्कि ज़मीनी हकीकत से गहरे सरोकार रखती है। 'जय विजय', 'रवि वार', और 'उगता भारत' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं और समाचार माध्यमों में उनके लेख प्रकाशित होते रहे हैं। उन्होंने बाल साहित्य के क्षेत्र में भी बेहतरीन योगदान दिया है। उनकी बाल कविताओं का राजस्थानी भाषा में अनुवाद किया गया, जो 'बाल बत्तीसी' नामक संग्रह में संकलित हैं। यह कार्य उनकी रचनाओं की भाषायी और सांस्कृतिक पहुंच को दर्शाता है।

सम्मान और पहचान

डॉ. सत्यवान सौरभ को उनके साहित्यिक योगदान के लिए कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किया गया है। उनमें से कुछ प्रमुख सम्मान इस प्रकार हैं: पं. प्रताप नारायण मिश्र राष्ट्रीय युवा साहित्यकार सम्मान (2023) – यह सम्मान उन्हें भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ द्वारा उनके दोहा संग्रह 'तितली है खामोश' के लिए प्रदान किया गया। राष्ट्रीय लघुकथा संग्रह 'दमकते लम्हे' में उनकी लघुकथा 'फैसला' को देश-विदेश के 125 श्रेष्ठ लघुकथाकारों में स्थान मिला। महात्मा गांधी पुरस्कार – यह सम्मान उन्हें और उनकी पत्नी प्रियंका सौरभ को संयुक्त रूप से स्वतंत्र पत्रकारिता और साहित्य लेखन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। इन सम्मानों से यह स्पष्ट होता है कि डॉ. सौरभ की लेखनी सिर्फ साहित्यिक नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय महत्व की भी है।

प्रेरणादायक संघर्ष

डॉ. सत्यवान सौरभ की जीवन यात्रा सिर्फ एक साहित्यकार की नहीं, बल्कि एक संघर्षशील युवा की प्रेरणादायक गाथा है। ग्रामीण परिवेश, सीमित संसाधन और आर्थिक संघर्षों के बावजूद उन्होंने न केवल शिक्षा प्राप्त की, बल्कि साहित्य और सेवा के क्षेत्र में अपनी सशक्त पहचान बनाई। वे न केवल खुद के लिए, बल्कि आने वाली युवा पीढ़ी के लिए एक आदर्श बनकर उभरे हैं। उनका जीवन संदेश देता है कि अगर मन में जिज्ञासा, आत्मबल और संकल्प हो तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता।

व्यक्तित्व और दृष्टिकोण

डॉ. सौरभ का व्यक्तित्व शांत, विनम्र और विचारशील है। वे सदैव समाज में सकारात्मक परिवर्तन की बात करते हैं। उनका लेखन मानवतावाद, सहिष्णुता और सामाजिक सुधार की भावना से ओतप्रोत होता है। वे मानते हैं कि लेखक सिर्फ शब्दों का जादूगर नहीं होता, बल्कि वह समाज का मार्गदर्शक भी होता है। इसीलिए उनकी रचनाएँ सिर्फ मनोरंजन नहीं करतीं, बल्कि पाठकों को सोचने, आत्ममंथन करने और जागरूक होने के लिए प्रेरित भी करती हैं।

नवीन परियोजनाएँ और भविष्य की योजनाएँ

डॉ. सौरभ वर्तमान में कई नई साहित्यिक परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं। वे बाल साहित्य को और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए समर्पित हैं और युवाओं में लेखन की रुचि जगाने हेतु कार्यशालाएँ और प्रेरणात्मक सत्र आयोजित करने की योजना बना रहे हैं। इसके साथ ही वे डिजिटल माध्यमों के ज़रिए साहित्य को गाँव-गाँव तक पहुँचाने के प्रयास में भी लगे हुए हैं।

निजी जीवन

डॉ. सत्यवान सौरभ का पारिवारिक जीवन भी सादगी और प्रेरणा से भरा है। उनकी पत्नी प्रियंका सौरभ स्वयं भी लेखिका और पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय हैं। दोनों मिलकर सामाजिक जागरूकता और महिला सशक्तिकरण के लिए कार्य करते हैं।

युवा साहित्य का उगता सूरज

डॉ. सत्यवान सौरभ का जीवन और साहित्यिक योगदान आज के समय में युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणास्त्रोत है। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि परिस्थितियाँ कैसी भी हों, अगर इरादे मजबूत हों और कर्म सच्चे हों, तो सफलता अवश्य मिलती है। उनकी लेखनी में समाज का दर्पण है, विचारों की गहराई है, और आने वाले कल का सपना भी। हिंदी साहित्य को एक नई ऊर्जा देने वाले इस युवा साहित्यकार का योगदान आने वाले समय में और भी महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

एक नया भारत: जो अपने मार्ग, रिश्ते और मर्यादाएं स्वयं तय करता है

भारत और बांग्लादेश के बीच रिश्ते हमेशा से गहरे और जटिल रहे हैं, जो इतिहास, संस्कृति और भौगोलिक निकटता की बुनियाद पर टिके हैं। 1971 के बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में भारत की अहम भूमिका ने दोनों देशों के बीच एक मजबूत रिश्ते की नींव रखी थी, जिसे समय-समय पर आपसी सहयोग और विश्वास ने और मजबूत किया। लेकिन हाल के वर्षों में, खासकर बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन और नई अंतरिम सरकार के आने के बाद, इन रिश्तों में तनाव के संकेत दिखने लगे हैं। भारत द्वारा हाल ही में लिया गया एक फैसला इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि अब भारत अपनी विदेश नीति में सौहार्द्र से ज्यादा अपनी रणनीतिक सजगता और राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दे रहा है। भारत ने बांग्लादेश को दी गई उस ट्रांसशिपमेंट सुविधा को बंद कर दिया है, जिसके तहत बांग्लादेश 2020 से भारत की जमीन के रास्ते नेपाल, भूटान और म्यांमार जैसे देशों को सामान भेजता था। यह फैसला न केवल व्यापारिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारत की सुरक्षा चिंताओं और क्षेत्रीय प्रभाव को भी रेखांकित करता है।

यह फैसला उस समय आया है, जब बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस ने हाल ही में चीन की अपनी यात्रा के दौरान एक विवादास्पद बयान दिया। यूनुस ने भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को ₹लैंडलॉक्ड₹ बताते हुए कहा कि बांग्लादेश इस क्षेत्र के लिए समुद्र तक पहुँच का एकमात्र संरक्षक है। इतना ही नहीं, उन्होंने चीन से आर्थिक विस्तार की अपील करते हुए कहा कि बांग्लादेश इस क्षेत्र में चीनी अर्थव्यवस्था का विस्तार बन सकता है, जहाँ से चीन उत्पादन कर वैश्विक बाजारों तक पहुँच सकता है। इस बयान ने भारत में तीखी प्रतिक्रिया को जन्म दिया। असम के मुख्यमंत्री ने इसे ₹आपत्तिजनक₹ और ₹निंदनीय₹ करार दिया, और भारत की रणनीतिक रूप से संवेदनशील ₹चिकन नेक₹ कॉरिडोर की कमजोरी को उजागर करने वाला बताया। भारत के लिए यह बयान न केवल एक कूटनीतिक अपमान था, बल्कि यह उसकी सुरक्षा चिंताओं को भी छू गया, खासकर तब जब पूर्वोत्तर क्षेत्र पहले से ही चीन की बढ़ती गतिविधियों और प्रभाव के कारण संवेदनशील बना हुआ है।

भारत का यह कदम सिर्फ यूनुस के बयान का जवाब नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक रणनीति का हिस्सा है, जिसमें भारत अपनी सीमाओं और रास्तों को सुरक्षित रखने के लिए सख्त कदम उठाने से नहीं हिचक रहा। पूर्वोत्तर भारत, जो भौगोलिक रूप से संवेदनशील है और जहाँ की सीमाएँ बांग्लादेश, म्यांमार और चीन से लगती हैं, वहाँ भारत किसी भी तरह का जोखिम नहीं लेना चाहता। ट्रांसशिपमेंट सुविधा के तहत बांग्लादेश को भारत के रास्ते तीसरे देशों तक पहुँच की अनुमति देना भारत के लिए एक संभावित खतरा बन सकता था, खासकर तब जब यूनुस ने खुले तौर पर चीन को इस क्षेत्र में आर्थिक और संभवतः सामरिक प्रभाव बढ़ाने का न्योता दिया। इसके अलावा, भारत ने यह भी बताया कि इस सुविधा के कारण उसके बंदरगाहों और हवाई अड्डों पर भारी भीड़भाड़ हो रही थी, जिससे भारत के अपने निर्यात में देरी और लागत में वृद्धि हो रही थी। यह एक व्यावहारिक कारण हो सकता है, लेकिन समय और संदर्भ को देखते हुए यह साफ है कि यह फैसला कूटनीतिक संदेश देने के लिए भी लिया गया है।

इस फैसले का असर बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था पर गहरा पड़ सकता है। बांग्लादेश, जो भारत के रास्तों पर निर्भर होकर नेपाल, भूटान और म्यांमार जैसे देशों तक अपने सामान भेजता था, अब उसे वैकल्पिक मार्ग तलाशने होंगे। ये मार्ग न केवल महंगे होंगे, बल्कि समय और संसाधनों के लिहाज से भी जटिल होंगे। बांग्लादेश के अपने बंदरगाह, जैसे चटगाँव और मोंगला, पहले से ही भीड़भाड़ और सीमित क्षमता से जूझ रहे हैं, और इनकी अंतरराष्ट्रीय कनेक्टिविटी भारतीय बंदरगाहों की तुलना में कम है। इससे बांग्लादेश के निर्यात में लागत और समय दोनों बढ़ेंगे, जिसका सबसे ज्यादा असर उसके कपड़ा उद्योग जैसे क्षेत्रों पर पड़ेगा, जो पहले से ही वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं। भारत ने यह स्पष्ट किया है कि यह रोक केवल बांग्लादेश के जरिए तीसरे देशों के व्यापार पर लागू है, न कि भारत और बांग्लादेश के आपसी व्यापार पर। यह एक संतुलित कदम है, जो यह दर्शाता है कि भारत अपने पड़ोसी को पूरी तरह अलग नहीं करना चाहता, लेकिन वह अपनी शर्तों पर रिश्तों को परिभाषित करना चाहता है।

इस घटनाक्रम ने भारत और बांग्लादेश के बीच पहले से ही तनावपूर्ण रिश्तों को और जटिल बना दिया है। बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के बाद से दोनों देशों के बीच कई मुद्दों पर मतभेद उभरे हैं। भारत ने बार-बार बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों, खासकर हिंदुओं, पर हो रहे हमलों के प्रति चिंता जताई है, लेकिन यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार इस मुद्दे पर ठोस कदम उठाने में नाकाम रही है। इसके अलावा, यूनुस का चीन के साथ बढ़ता करीबी रुख भारत के लिए एक और चिंता का विषय है। यूनुस ने न केवल आर्थिक सहयोग की बात की, बल्कि चिकन नेक क्षेत्र के पास एक चीनी एयरफील्ड बनाने की चर्चा भी की, जिसके लिए बांग्लादेश ने चीन को सैन्य सहयोग के लिए आमंत्रित किया। यह भारत के लिए एक बड़ा सामरिक खतरा है, क्योंकि चिकन नेक कॉरिडोर भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को मुख्यभूमि से जोड़ने वाला एकमात्र संकरा रास्ता है। ऐसे में, भारत का यह फैसला एक सख्त संदेश है कि वह अपनी सुरक्षा और रणनीतिक हितों से कोई समझौता नहीं करेगा।

इस पूरे प्रकरण से भारत की बदलती विदेश नीति की एक स्पष्ट झलक मिलती है। भारत अब दक्षिण एशिया में केवल सबसे बड़ा देश नहीं है, बल्कि वह एक जागरूक और निर्णायक रणनीतिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। वह अब यह तय करने की स्थिति में है कि उसके रास्तों का उपयोग कौन करेगा और कौन नहीं। यह कदम भारत की आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को दर्शाता है। भारत अब यह समझ चुका है कि क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा के लिए उसे अपनी शर्तों पर काम करना होगा, न कि केवल पड़ोसियों की अपेक्षाओं या दबाव के आधार पर। यह फैसला भविष्य के लिए भी एक संकेत है—भारत अब नरम कूटनीति से आगे बढ़ चुका है। वह अपने हितों की रक्षा में संकोच नहीं करता, चाहे इसके लिए उसे किसी रिश्ते की सुविधा को ही क्यों न कुर्बान करना पड़े। यह एक नए भारत की तस्वीर है, जो न केवल अपनी सीमाओं को सुरक्षित रखना जानता है, बल्कि अपने रास्तों और रणनीतिक हितों को भी।

प्रो. आरके जैन “अरिजीत”, बड़वानी (मप्र)

कोरिया से सरायकेला छऊ देखने भंडारीसाही पहुंचे प्रोफेसर व संग्रहालय अधिकारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला, झारखंड , ओडिशा , बंगाल की शान पवित्र यात्रा घट की संध्या पर सरायकेला शैली छऊ नृत्य देखने सात समंदर पार कोरिया से तीन सदस्यीय एक टीम सरायकेला के भंडारीसाही पहुंची है । कोरियन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तथा कोरिया राष्ट्रीय संग्राहालय से कुल तीन सदस्यीय टीम ने वृहस्पतिवार को कोरिया से भंडारीसाही गांव पहुंचकर छऊ नृत्य को देखा एवं सराहा ।सरायकेला शैली नृत्य को देखने के बाद वे काफी खुश नजर आये ।

सरायकेला से छह किलोमीटर दूर स्थित भंडारी साही गांव के विधालय में कोरिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पार्सैकोवान यासूका यहां चार बजे शाम पहुंचे ।वे कल कोरिया से निकलकर सीधे राची होते हुए सरायकेला पहुंचे फिर बंगाल छऊ के तरफ रूख किया । उनके साथ कोरिया संग्राहालय के दो संग्राहालय अधिक्षक स्तर के चौंगयानुक तथा उनके महिला सहयोगी पेशनचुसिया भी वहां साथ में पहुंची ।

कोरियन प्रोफेसर पार्सोकोवान जो मुखौटा नृत्य कला पर शोध भी कर रहे हैं बहुत कुछ जानने की कौशिश की ओडिया साहित्य में रस रंगों के विषयक । उनके समक्ष सरायकेला छऊ के गणेश नृत्य, देवदासी, हर पार्वती, धनुर्विद्या आदि नृत्य पेश की गयी ।सुरेश तांती से सबसे पहले गणेश वंदना, उसके बाद देवदासी नृत्य में केरला पब्लिक स्कूल कदमा , जमशेदपुर के प्रगति व प्राजंल पट्टनायक, हर पार्वती में गणेश परिच्छा तथा संजय कर्मकार ,धनुर्विद्या में सुमित तांती ,राजा तांती, रोहित महतो जबकि लवकुश में रोहित महतो तथा सुरज तांती ने नृत्य पेश किया । जहां वाद्ययंत्र में प्रफुल्ल नायक, बाउंरी महतो , सुधांशु पाणी ,बलराम दास ने नृत्य पेश की ।जहां गान के प्रधान दिलीप महतो, मनोज महतो, हिमांशु तांती रविन्द्र तांती की भूमिका सराहनीय रही ।

महावीर जयंती पर इन्दौर के दिगंबर जैन समाज द्वारा विशाल शोभायात्रा निकाली गई जो इतवरिया बाजार कांच मंदिर से शुरू होकर विभिन्न मांगों होते हुए खजूरी बाजार, राजबाड़ा, जवाहर मार्ग होते हुए कांच मंदिर में सम्पन्न हुई।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**